UNIVERSAL LIBRARY

OU_182289

UNIVERSAL LIBRARY

OUP—68—11-1-68—2,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No H81 M67L   Accession No. H3458

Author मिश्र, वीरेन्द्र

Title लेखनी-बेला तथा अन्य कृतियाँ, 1958

This book should be returned on or before the date last marked below

ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थाङ्क—६४

लेखनी-बेला

तथा

अन्य कृतियाँ

वीरेन्द्र मिश्र

भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला-सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन एम० ए०

प्रकाशक
मंत्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

•

प्रथम संस्करण
जनवरी १९५८ ई०
मूल्य तीन रुपये

•

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

यह सृजन

'लेखनी-बेला' में अपनी कविताओंके सम्बन्धमे स्वयम् कोई वक्तव्य मै नही दे रहा हूँ। पिछले सग्रह 'गीतम' (१९५३) मे भी मैं इससे बचा था। भविष्यमे यदि आवश्यक समझूँगा तो सविस्तार कुछ कहूँगा। और तभी रचनामूलक मेरे दृष्टिकोण, मान्यताएँ, तथा मन्तव्य हिन्दी काव्य और काव्यकारसे सम्बद्ध भूमियोंपर उजागर हो सकेंगे।

'गीतम' के पश्चात् लिखित मेरी छोटी-बडी सत्तावन रचनाओं के इस प्रतीक्षित नये गीत-सग्रहमे प्रेमी पाठकों और श्रोताओंको पूर्व परिचय का आकर्षण मिलेगा।

मैने यहाँ कुछ उन कविताओको भी स्थान दिया है जो गीतम-कालके पहलेकी है पर महत्त्वपूर्ण है। 'मसूरी' एक ऐसी ही ध्वनि-रचना है, जिसे मैने रंगावलोकन तथा दृश्य-प्रभावकी एक ही कलम से उक्त प्रकृति-केन्द्र घूमते समय ज्यो-का-त्यो रेखाकित कर लिया था।

'देश' भी है इसमें, जिसका व्यापक रूप से स्वागत हो चुका है। देशकी संस्कृति और शान्तिकी पृष्ठ-भूमिपर इतिहास, भूगोल और राजनीतिकी नामावली-प्रणालीमे सर्वदा लिखित रचनाओसे भिन्न है यह संगीतमयी कृति। कला और सास्कृतिकताके उपेक्षित तत्त्वों का इसमें आलोकन हुआ है।

इस सग्रह में अत्यन्त छोटे गीत भी हैं जिन्हें अपने विशेष छन्दों में लिखा गया है। कुछ अन्य गीत है जिनमे विभिन्न जीवनानुभूतियाँ अपनी तरह से अभिव्यक्त हुई है। विगत संग्रहकी ही भाँति इस

संकलनमे भी मृत्यु, निराशा तथा रीतिकालीन शृङ्गार-गन्धसे मुक्त गीतो द्वारा नये वातावरणका प्रभाव निवेदित हुआ है।

भारतके सांस्कृतिक प्रतिनिधि-मण्डलके एक सदस्यके नाते अपनी नेपाल-यात्राके समय विमानका अपना यात्रानुभव हिन्दीके वर्तमान काव्य-धरातलके प्रतीक रूपमें मुक्त छन्द के 'वायुयान मे' सहज भावसे व्यक्त करनेका प्रयत्न किया है।

विविध रूप विधानके इस संग्रहमे कृतित्वकी मनोवाञ्छित अभिव्यक्ति मुझे अधूरी ही लगती है। शब्द-स्वर द्वारा अभी अनकहे हिमालयकी कितनी अनवरत अभिव्यंजना होनी है! फिर भी यदि इन रचनाओमे मुझे कही कोई सफलता मिली हो तो उसे पाठक और समीक्षक अग्रसर कर सकते है। उन्हें मेरा अग्रिम धन्यवाद!

आग्रे का बाजार
लश्कर (ग्वालियर)

वीरेन्द्र मिश्र

रचना-क्रम

१.	शब्द-स्वर वाले दुराहे पर	[लेखनी-बेला]	९
२.	तू सिसकती शाम-सा गमगीन है	..	१३
३.	मिले हो तो कहो कुछ तुम	.. ...	१६
४.	मिल गये हो मददगार हम-उम्र तुम	. ..	१८
५.	आज मुझसे कहा गीत ने	. .	२१
६.	घटा उठे तो मेरा भी मन हो	. .	२३
७.	तुम्हारे प्यार की दहरी बुलाती है मुझे	... ...	२५
८.	आँसू बिल्कुल ही सो जाएँ	.. ...	२८
९.	जाते-जाते मुड-मुड कर मत देखो तुम	... ...	३१
१०.	जा रहा हूँ, नहीं भूलना	... .	३४
११.	दूरी और निकटता का अद्भुत विस्तार हुआ जाता है		३६
१२.	तेरे हर आँसू से बोझिल है मन मेरा	. ...	३९
१३.	तुम मेरे गीतो के द्वारे आओ ना आओ	.. ..	४१
१४.	मेरे नयन की उदासी तुम्हें ज्ञात है	.. ...	४३
१५.	खडा उम्र की दहरी पर मै सोचता	..	४६
१६.	आज मावस मुझे है मिला	... ..	४९
१७.	पीता हुआ अँधेरा बढ़ता जाता हूँ	... ...	५१
१८.	बढ़ा दिया है पॉव आज मैने अलबेली राह पर	...	५४
१९.	एक मस्ती मिली	.. ...	५७

२०. हो रहे हैं सब तरफ से ६०
२१. किसी स्वप्न को खोज लाने डगर पर ६४
२२. रो-रो कर सिन्दूर ढूँढ़ती ६८
२३. जब भी गिरा एक आँसू कहीं ७१

२४. सपन सभी जो ७३
२५. इस दिये के माथ पर ७६
२६. सुख भी छूटा ७९
२७. मन ! तुम न टूटो अभी हार कर ८२
२८. बिल्कुल नये अश्रु के राहियो ! ८४

२९. निशा के राजकुँवर ! [डूबते चाँद के प्रति] ८७
३०. कुंकुम बिखेरती सुबह सुहागिन गाती है [फागुन] ८९
३१. कि जब नील नभ में चमकता सितारा [जूहू-स्मृति] ९२
३२. सावन ने तो आँखें भर डाली बादल से ९५
३३. ठण्डी-ठण्डी छाँव है [मसूरी] ९८
३४. नीली निशा के किनारे [सितारे] १०६
३५. घिरते रहो, घुमडते रहो [बादल से] १०८
३६. पगडण्डी से जाने वाली [युग की भोर] १११

३७. दृग की दुकान पर ११३
३८. जिस समय से रचा गीत है ११५
३९. किसने निहारा ११७
४०. मैंने कोहनूर-सा प्यार किया १२०
४१. चूल्हा जलता रहे ज़िन्दगी का सदा [गीत की बिक्री के क्षणोंमें गीत के प्रति गीत] १२२
४२. मेरे मन तुम पढ़ो और समझो तो इस संसार को ... १२४

४३. कलम चल रही है कागज पर १२६
४४. तोडने को डोर पल में तोड दूँ, मुश्किल नहीं है . १२६
४५. ओ समय की वसन्ती किरन ! १३१
४६. सत्य को एक बार देखा . .. १३३
४७. भैरवी का है समय [गीतकार के प्रति] १३७
४८. मिट्टी से फसलों का सोनादेने वाला देवता [किसान] १३६
४६. लो अब गाता हूँ [देश] १४१
५०. आवाज आ रही है [कलम के जादूगरो ! उठो] १४६
५१. ज्योति दो १५७
५२. गूँज-भरे जंगल में १६१
५३. आज मैं आकाश में हूँ १६६
५४. साझ-सकारे चन्दा सूरज करते जिसकी आरती . १७२
५५. कौन स्वीकारै भरी अंजलि नयन की १७५
५६. बोल, बोल, बोल, अरी बेला ! तू है कहाँ . १७८
५७. मंजिल के मन्दिर में, पूजा के थाल-सा १८१

लेखनी-बेला

१

शब्द-स्वर वाले दुराहे पर
देख तो रे, जुड़ रहा मेला
बीन पर है गीत का जादू
लेखनी में गूँजती बेला

कल्पना के कण्ठ में सरगम
भैरवी में भावना का क्रम

दो डगर है एक मंजिल की
धार दो है, एक है संगम

दर्द को शहनाइयों में सुन
गीत की गहराइयों में बुन

मन निराशा से नहीं बहला
पास तो आसावरी के जा

तू कहेगा कौन दावे से
लौट आ पिछले भुलावे से

गीत है सागर अगर संगीत मन्थन है
व्यक्ति का अभिव्यक्ति में अद्भुत विसर्जन है

गद्य वाले राज-पथ पर तू
व्यर्थ जाकर हाथ मत फैला

●

गूँज पर छाया तिमिर कैसा
व्योम है तम के शिविर जैसा

जब भ्रमित-शंकित सृजेता भी
काल सम्भव है न फिर ऐसा

जब कि ज्वाला शान्त होगी कल
यह सदी दृष्टान्त होगी कल

यह कि कविता की ध्वजाओं को
आह से फूटी ऋचाओं को

लोग कुछ करते उजागर थे
धूल में भी फूल के स्वर थे

ज्ञान या विज्ञान के तूफान के आगे
थे नहीं सब लोग भेड़ों की तरह भागे

गीत की रस-रागिनी सुनकर
थम गया था अश्रु का रेला

•

छन्द रे, स्वच्छन्द होकर गा
मत कहीं भी बन्द होकर गा

साँस से सींचे बगीचे में
फूल-सा खिल, गन्ध होकर गा

गन्ध लेकिन गूँजती भी हो
धूल जिसको पूजती भी हो

बन स्वयम् मन्दिर निवेदन का
हो नहीं बन्धन विशेषण का

अश्रु ही दीवार हो उसमें
स्वप्न वन्दनवार हो उसमे

धूप से थक लेखनी जो छाँह में उतरी
थाम ले तू आज उसकी पीर की गठरी

ज़िन्दगी के चन्दनी तन का
चाँदनी आँचल हुआ मैला

●

२

तू सिसकती शाम-सा गमगीन है
आ तुझे खिलती किरन तक ले चलूँ
गीत के रूपम गगन तक ले चलूँ

स्वप्न तेरे उड गये आकाश में
तू पुजा तो आँसुओं के हार से
तैरता मन कूल वाली प्यास में
क्या उसे फिर द्वीप के त्यौहार से
तू अ-पूजित मूर्ति-सा चुपचाप है
आ तुझे मुखरित सपन तक ले चलूँ
साफ-सुथरे आचरण तक ले चलूँ

•

देखते हम आ रहे हर कन गरम
रेत के हर श्वेत रेगिस्तान का
एक हिरनी, एक तृष्णा, एक भ्रम,
प्रश्न फिर है ही नहीं मधुपान का
गन्ध तू भटकी हुई वीरान में
आ तुझे तेरे पवन तक ले चलूँ
एक सिन्दूरी चमन तक ले चलूँ

•

हर दिशा में भागनेवाली हवा !
देख, सूनी है मलय की पालकी
जुड़ रही है सर्द साँसों की सभा
और त्यौरी है बदलती काल की

जो कि तेरे ही दुखों से है दुखी
चल उसी भीगे नयन तक ले चलूँ
चाँद को जाते चरण तक ले चलूँ

•

जगमगा तू चाँदनी की सेज पर
मै रहूँ तो द्वार का स्वरकार ही
मजिलो के मन्दिरो में भेजकर
मै रहूँ तो सिर्फ वन्दनवार ही

मूक राधा की निरुत्तर बाँसुरी
चल तुझे संगीन-क्षण तक ले चलूँ
रूप-मन को गीत-मन तक ले चलूँ

•

३

मिले हो, तो, कहो कुछ तुम, कहें कुछ हम, सुने जीवन
बहुत दिन बाद फिर सुनने-सुनाने का हुआ है मन

न जाने तुम कहाँ किस पन्थ से चलकर यहाँ आए,
कहीं पर भोर की होगी कि जो ढलकर यहाँ आए
जरा बोलो किरन-स्वर में, धुँधलके के कटें बन्धन
न रूठे तुम, मगर फिर भी मनाने का हुआ है मन

●

जवानी की गियाम-न-मे, यहाँ तुम मौन बैठे हो
हृदय रह-रह यही कहता, न जाने कौन बैठे हो
कहीं तुम भी जगत की भाँति, बदले तो नहीं इस क्षण
न हम-तुम मिल सकें यों भी, जमाने का हुआ है मन

●

कहोगे तुम कि क्यों सन्देह की यह कल्पना की है
रुआसी साध ने मेरी, तुम्हारी साधना की है
बहुत है आँसुओं का मोल, मेरी साँस का क्रन्दन
इसी से फिर तुम्हें अपना बनाने का हुआ है मन

●

अधर की प्यास झूली है, सलौनी याद के झूले
कहो सघर्ष की गाथा, कहाँ भटके, कहाँ भूले
जरा अब मुस्कराओ भी, खिले मधुऋतु, बहे सावन
वसन्ती चाँदनी में झूम जाने का हुआ है मन

●

न जो गाया गया, वह गीत गाने का हुआ है मन
मिले हो तो, कहो कुछ तुम, कहें कुछ हम, सुने जीवन

●

४

मिल गये हो मददगार हम-उम्र तुम
लग रहा है चमकता सितारा मुझे
स्वार्थी विश्व में है किसे क्या पता
प्यार कितना मिला है तुम्हारा मुझे

मै भ्रमर गीत जब गुनगुनाता रहा
पारखी एक श्रोता मिला ही नहीं
थे महकते रहे डालियों पर बहुत
धूल में फूल कोई खिला ही नहीं

गीत की आरती का समय हो गया
तब तुम्हीं ने नयन भर निहारा मुझे
ताज का संगमरमर हिला देखकर
प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे

•

जब निशा का प्रथम ही प्रहर था लगा
ज़िन्दगी का दिया टिमटिमाने लगा
ऑसुओं की झडी, ऑधियो का तिमिर
काल शतरज अपनी बिछाने लगा

तब तुम्हीं नेह लेकर प्रकाशित हुए
चाहिये और क्या था सहारा मुझे
रूप कितने खडे आज पछता रहे
प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे

•

भूल पाए न तुमको बिछुड़ कर, मगर
भूल बैठे तुम्हें भी कि जब आ मिले
ये हमारी तुम्हारी कशिश खूब है
तुम हमें जब मिले, गीत से जा मिले

और सच तो यही, हो विरह या मिलन
प्रेरणा बन तुम्हीने पुकारा मुझे
तुम हमें दिख रहे, हम तुम्हे लिख रहे
प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे

●

रोशनी दे रहे चाँद-सूरज, मगर
दर्द दिल का नहीं वे बता पा रहे
एक तुम प्राण के दीप हो मनचले
साथ मेरे खुशी से जले जा रहे

यह जलन है मधुर, यह तपन है बहुत
जन्म लेना पडेगा दुबारा मुझे
उम्र में प्यार का कर्ज चुकना कठिन
प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे

●

मेघ का राज है, खूब अन्धेर है
चिमनियों के धुएँ में छुपे है सपन
और आओ निकट, मत डरो आग से
है प्रलय-काल, फिर भी बढाओ चरण

एक पतवार तुम, एक पतवार मै
ले चलो नाव, दिखता किनारा मुझे
तीर पर जो खड़े हँस रहे, देख लें
प्यार कितना मिला है तुम्हारा मुझे

●

५

आज मुझसे कहा गीत ने
मन किसी रूपका जीतने
मौज से हार जा

आँख तूफान की अनखुली
चाँदनी है नहाई - धुली
आज मुझसे कहा रूप ने
छाँव दी शीतला धूप ने
ज़िन्दगी वार जा

•

सिर्फ तू ही नहीं है दुखी
पी रही पीर चन्द्रा-मुखी
आज मुझसे कहा प्राण ने
स्वप्न के भेद को जानने
अश्रु के द्वार जा

•

स्वप्न के माथ पर है शिकन
इस किनारे थकन ही थकन
आज मुझसे कहा प्यार ने
धार में उठ रहे ज्वार ने
तू नदी-पार जा

•

६

घटा उठे तो मेरा भी मन हो गाने को हँसने को
बादल चुप बैठा है उससे भी तो कहो बरसने को

पिछली मधुऋतु ने पी ली थी साँसों की सुरमई सुराही
चलते अब ये झुलसे अमलतास-से नयन-प्राण के राही
कोई पीर नदी बन जाए अँखिया नीर परसने को
तो उमड़ें-घुमड़ें गीतो के मेघ-मल्हार बरसने को

•

पगडण्डी वैसी ही टेढ़ी, लेकिन वह सूनी-सूनी है
या तो वह मरुथल की दासी, या वह साधू की धूनी है
कोई भीगी हुई साँवरी नागिन आए डसने को
तब तो सम्भव है आ जाए विष पर सुधा बरसने को

•

अम्बर के ऊँचे मचान से कजरी गा, बदरी कजरारी !
चुल्लू से ही पी लेंगे हम, ढोल जरा क्वारी पनिहारी !
मन हरियाए जामुन चूनर, घूँघट उठा दरसने को
मेरे गीत बड़े आकुल है तेरे साथ बरसने को

•

अमराई कर रही प्रतीक्षा, सावन का हमराही आए
चातक कहीं डबडबा जाए, कोयल कहीं रिमझिमा जाए
कुछ दिन को मिल जाय नगरिया इन्द्र-धनुष की, बसने को
युग-युग मन ले रंगसप्तमी, सातों रग बरसने को

●

७

तुम्हारे प्यारकी दहली बुलाती है मुझे
इसी से मैं तुम्हारे द्वार आया करता हूँ

सयानी रात करती बात मेरे चाँद से
मुझे लगता कि कोई गत रानी खिल रही
सपन। मेरा जुड़ा जाता तुम्हारी आँख से
मुझे लगता कि है कोई कहानी चल रही

तुम्हारी प्यास तो पागल बनाती है मुझे
इसी से मै समन्दर साथ लाया करता हूँ

•

ज़रा-सी जिन्दगानी है, बहुत-से दर्द है
मगर आकाशने दुखडा सुनाया है किसे
सलौने है कि जो अरमान मेरे, सर्द है
मगर उनसे कहो मैने सताया है किसे

तुम्हारी पीर वीणा-सी लुभाती है मुझे
इसीसे मै तुम्हें दुखड़ा सुनाया करता हूँ

•

निमन्त्रण-सा कहीं से आ रहा सन्देश है
मगर वह चुप नहीं, उसमें बडी आवाज़ है
सबेरे की हवा है, और सादा वेश है
तुम्हारा साज़ बजता है, तुम्हें भी नाज़ है

तुम्हारी रागिनी लगती प्रभाती है मुझे
इसी से मै हमेशा गुनगुनाया करता हूँ

जतन मै लाख करता हूँ तुम्हें भूलूँ जरा
निठुर तुम याद के दीपक जलाकर छोडते
डगर पर बैठ देखूँ आँधियों का माजरा
मगर तुम राह को मजिल बनाकर छोडते

तुम्हारी धूल उडती है, उडाती है मुझे
इसीसे मै सितारे तोड़ लाया करता हूँ

●

८

आँसू बिल्कुल ही सो जाएँ
सपने अपने में खो जाएँ
तुम इतनी रोशनी न फेंको
मेरे नयन बन्द हो जाएँ

माटी का बनगई दिया यह धूल नेह से गीली होकर
छूकर इसे धन्य कंचन भी, शेष न कुछ भी इसको खोकर
सूरज-चाँद इसे दुलराते
अन्धड आ-आ कर फिर जाते

मिट्टी के घर दिया गीत का सदा जला है गाते-गाते

कृति-आकृति सब कुछ लुट जाए
प्राणों का मेला उठ जाए
तुम इतना आकाश न छाओ
धरा-क्षितिज सब कुछ मिट जाए

●

भूली-भटकी बहुत जिन्दगी, आखिर कुछ पा जाने को ही
गायक आया, बीन छेडता, आखिर कुछ गा जाने को ही
मिले मुस्कराहट मजिल की
इसीलिए तो हूँ मै पथी

अर्थ-हीन मुसकानें होती उसमें, तो क्या मुझसे बनती

हर पत्थर बादल हो जाए
घर का घर पागल हो जाए
तुम इतना उल्लास न बाँधो
सुख से दुख बोझिल हो जाए

मुझको चलने देना है तो प्यार करो, मंजिल बन जाओ
वैसे ही तूफान बहुत है, पथ में तुम आँधी मत लाओ
निरखो तो परखो भी मन को
मेरे मधुमासी सावन को

आँसू से मत साफ करो तुम मेरे गीतों के दर्पण को
गीत जवानी में ढल जाए

काल समय पाकर छल जाए

तुमइ तना सन्ताप न साधो
जिसमें अगला कल जल जाए

●

जन्मे हुए गीत-गुञ्जन पर वासन्ती फूलों की टोली
चित्र-लिखित विस्मय-विमुग्ध है, इस पर क्या नीलामी बोली
यह मेरा संगीत सलौना
है बच्चों का नहीं खिलौना

इस पर चल पाएगा कैसे स्वर्ण-रजत का जादू टोना

यामा मिटे प्रात हो जाए
सब कुछ स्वर्ण-सात हो जाए
तुम इतना मधुमास न व्यापो
पाटल पारिजात हो जाए

●

६

जाते-जाते मुड़-मुड़ कर मत देखो तुम
बादल का गंगाजल ढुल-ढुल जाएगा

इस अकलुष अकलंक अश्रु के मोती को
दृग-संगम पर तुम्ही लुटाने आये थे
किसी हर्षवर्धन की तपसी साधों की
क्या तुम हमको याद दिलाने आये थे

लुटते-लुटते हमको भी मत लूटो तुम
पागल-सा पाहन-दिल गल-गल जाएगा

●

आज बिदा-बरखा भी धूमिल घडियों में
अमराई का सूना झूला हिलता है
दृग से काजल, पग से पायल, रूठ रहे
पर कोई रूठे भी तो क्या मिलता है

खिलते-खिलते प्राणों पर मत खेलो तुम
पाटल-दृग में सपना घुल-घुल जाएगा

●

मॅहदी-लगी-हथेली-जुड़ी कलाई की
धडकन को मत सुनो निगाहें गीली है
श्याम घटाओं के अनचीन्हें प्यालों से
सर्द हवा ने भीगी सुधियाॅ पी ली है

पंछी बन कर उड़-उड़ कर मत देखो तुम
घायल-सा स्नेहाञ्चल खुल-खुल जाएगा

हम गीतों के इन्द्रधनुष है, शर हो तुम
जगल में मगल-सी रजनीगन्धा हो
पर उसकी हरियाली रोकोगे कैसे
जो सब कुछ हो पर सावनका अन्धा हो

अगर निरखना हो तो नभ को निरखो तुम
शबनम से मलयानिल धुल-धुल जाएगा

१०

जा रहा हूँ, नहीं भूलना,
याद् करना कि जब भूलना,
प्यार की डाल पर

आज रोती हुई आँख है
और भींगी हुई पाँख है
कल उजाली दिखेगी निशा,
जगमगाने लगेगी दिशा,
चाँद के भाल पर

•

पीर है, तुम सहो, मै सहूँ
क्या कहूँ, और मै क्या कहूँ ?
देख-सुन राह चलना जरा,
घाटियों में सम्हलना जरा,
खास कर ढाल पर

•

अब तलक कब पता था चला
उम्र से उम्र का फासला
जा रहा मै अकेला कहीं,
धूल कोई हरेगा नहीं,
उड रहे बाल पर

•

११

दूरी और निकटता का अद्‌भुत विस्तार हुआ जाता है
इतनी दूर रहा न करो तुम जीवन भार हुआ जाता है

गिनती की साँसें है उनपर भी संभार नहीं कुछ कम है
अनहोनी बातें है जिनका दुर्व्यवहार नहीं कुछ कम है
तिस पर तिल-सा एकाकी हर निमिष पहाड हुआ जाता है

•

नीव-हीन पतझर आ-आ कर बसा रहा वीरान नगरिया
भाग रहे पछी उड-उडकर, शेष हुए घरबार अटरिया
देर न लगती मधुवन का मधुवन मिस्मार हुआ जाता है

•

तुम भी कुछ-कुछ खोए होगे, बारम्बार कहो न कहो तुम
चुपके-चुपके रोए होगे, बन जलधार बहो न बहो तुम
तट जिसको समझे था माझी, वह मझधार हुआ जाता है

•

दुनियाँ का बाजार भरा है, हँसते आँसू, रोते सपने
नदिया-नाले-पर्वत के उस पार शिविर है अपने-अपने
मेरी प्यासी पलकों को दर्शन दुश्वार हुआ जाता है

•

कल तक जो चुप्पी साधे था, प्रिय-वियोग का गीत रुआसा
मेरे पास चला आया है लेकर जाने क्या-क्या आशा
बचना बहुत कठिन है उससे, जो गलहार हुआ जाता है

देखो तो, घिरती आती है भोर-गगन में काली छाया
कर्त्तव्यों के दीप-शिखर पर, शलभ बनी कंचन-सी काया
अपने हास-रुदन पर अब युगका अधिकार हुआ जाता है

●

१२

तेरे हर आँसू से बोझिल है मन मेरा
फागुन की आँखों में सावन भर आया है

किरनों की आँखें किस नेहा में डूबी है
मुझको तो वासन्ती अम्बर भी सावनी
कोई यह कहता है दुखडा यह कम होगा
लिख-लिख कर गा-गाकर सुधियों की लावनी

उजडी-सी बस्ती है, जंगल है मन मेरा
ऐसे में रोता तू मेरे घर आया है

•

सासों की राधाएँ, धड़कन के मनमोहन
खेले है तेरी उस मस्ती की छाँव में
तूने जो मेरे सन्तापों को दे दी थी
सूरज-सा आया था, चन्दा के गाँव मे

तब से ही डाली पर पाटल है मन मेरा
तेरा दुख उसमें अब शबनम धर आया है

•

इतना मत रोना रे, इतना मत दुख देना
रुक जाए दूरी पर, सपनों की पालकी
पानी में तैरी जो किरनों की इन्द्रेनी
दासी बन जाए वह अँधियारे काल की

वैसे ही युग-युग से घायल है मन मेरा
चिन्ता का पाहुन क्यों माथे पर आया है

३

१३

तुम मेरे गीतों के द्वारे आओ ना आओ
दरद भरे मनकी आकुलता को तो आने दो

तुम मुझसे अनजान मगर दुख तो अनजान नही
उससे तो हो चुकी बहुत पहले पहचान कही
कही रहे वह किसी नयन मे, है वह मेरा ही
कैसे कह दूं उसको होगा मेरा ध्यान नही

तुम अपनी शरबती निगाहे करलो बन्द भले
आँखो से बह रही सरलता को तो आने दो

●

जिस बाँसुरिया के प्यासे दिन-रात अधर मेरे
उसी डगर से साँवरिया तक जाते स्वर मेरे
मन का गान-निवेदन सुननेवाले श्रोता ओ
उसी एक वशी का जादू होता घर मेरे

तुम अपने निर्विघ्न मौन में पल-पल सुखी रहो
बेचारी सगीत बहुलता को तो आने दो

●

मै धडकन का प्यासा मुझको भाता घोष नही
लेकिन मुझको किसी शोर पर रोष नही
किस पर्वत की कौन शिला तुम पता न भक्तों को
पूजन भी है नशा कि जिसमें रहता होश नहीं

तुम पाषाणी मूर्ति बने मन्दिर को धन्य करो
पर मुझ तक अपनी दुर्बलता को तो आने दो

●

१४

मेरे नयन की उदासी तुम्हें ज्ञात है
रूठे अगर तुम सपन तिलमिला जॉयगे
मेरी खुशी पर दुखी मेघ घिर आँयगे
मैं कह रहा हूँ कि तुम मुस्कराओ जरा

पूनम-अमावस मिली रात की राह पर तुम दिया जगमगाए रहे
चूनर गुलाबी नजर की उडा कर रुआसे क्षणों को भुलाए रहे

जीवन-नदी पूर है आज, बरसात है
हारे लहर से लहर में समा जॉयगे
मन के पडोसी-बिदेसी न घर ऑयगे
मै कह रहा हूँ कि तुम जगमगाओ जरा

●

यह जो उडे जा रहे खग सुबह-शाम, यह जो उडी जा रही धूल है
यह सब तुम्हे देख कर हो रहा है कि मरुथल बना अश्रु का फूल है

मन की अंधेरी-उजेरी किये साथ है
भूले अगर तुम, नयन डबडबा जॉयगे
बीते कथा-गीत भर-भर उभर ऑयगे
मै कह रहा हूँ कि तुम गुनगुनाओ ज़रा

●

ढूँढी बहारें गगन में; जलधि में, कहीं कुछ मिला ही नहीं प्राणको
जब से तुम्हे है निहारा, पुकारा, दुलारा, मिली गन्ध वीरान को

तुम पर निछावर सदा फूल है, पात है
शबनम रुलाकर सुमन फिर कहाँ जॉयगे
सौरभ-संदेसे हवा में बिखर ऑयगे
मै कह रहा हूँ कि तुम झूम जाओ ज़रा

सच पूछते हो अगर, तो सुनो, एक ऐसी लहर है उठाना हमें
हम-तुम भले डूब जाएँ मगर धार से उठ पुकारे जमाना हमें

तुमसे छिपी अनकही कौन-सी बात है
जिस दिन प्रणय के विहग कर्बला जॉयगे
उस दिन निमिष जिन्दगी के अखर जॉयगे
फिर कह रहा हूँ कि तुम मुस्कराओ जरा

●

१५

खड़ा उम्र की दहली पर मैं सोचता—
एक फ़ूल तेरी वेणी में गूँथकर
जीवन में कब ला पाया मधुमास मैं
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मैं

सदा रहा तुझको बिलखाता हँसते हुए जहान में
तुझे खींच ले गया दूर तक मै आँधी-तूफ़ान में
  जितनी सिन्दूरी साधें थीं धरती से आकाश तक
एक-एक कर सब कुम्हलाई, धूल हुई वीरान मे

आज स्वय मै अपने से ही पूछता—
  एक पीर अगणित पीरों में पूछकर
      कितना तुझको दे पाया उल्लास मै
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मै

•

कभी सोचता था कि करूँगा होड गगन के चाँद से
बाधूँगा मलयानिल तेरी साँसो के उन्माद से
  रेशम के परिधानों में दुलहन नाचेगी झूमकर
मै युग-युग तक प्यार करूँगा, नई नवेली साध से

और आज मै आँख फाडकर देखता—
  पास पडा अमृत का प्याला छोडकर
      विष पीने का करता हूँ अभ्यास मै
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मै

•

प्राणों से प्यारे अरमानों पर मैने वारा तुझे
तुझे प्यार कर भी रचना की दुनिया में हारा तुझे
  फिर भी जीत मिली है जो, तेरे आगे कुछ भी नहीं
गीत और तू दोनों मेरे, और न कुछ प्यारा मुझे

मै खुशियों का राजसिहॉसन छोडता—
एक गीत अगणित सॉसों से जोडकर
भोगे जाता हूँ आर्थिक वनवास मै
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मै

●

साध रँगी गेरू से तूने, चला झुलसते पंथ पर
गॉव-नगर-नदिया-पर्वत के समारम्भ पर, अन्त पर
दरस-परस केवल पीडा का, नहीं मिला सुख का तुझे
बैरिन हुई दिवाली-होली, खिलते हुए वसन्त पर
ऑख भरे बादल नभ में है डोलता
एक बूँद तेरे ऑसू की चूमकर
सावन से कब रँग पाया आकाश मै
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मै

●

सारी बरबादी के पीछे भव्य सृजन की प्यास है
मिट्टी राख हुई तो क्या अब भी जीवित विश्वास है
तेरे स्वर में दृष्टि, दृष्टि में गीत, रूप में माधुरी
और चला चल, आने वाला कल स्मारक-इतिहास है
जीवन-नदी किनारे मूरा चीखता
एक बार तेरी धड़कन पर झूमकर
जीवित कर दूंगा शमशानी लाश मै
फिर तो चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मै

●

१६

आज मावस मुझे है मिली,
और पूनम तुझे है फली
किस पहर तक मुझे ?

सर्जना को मिटाता प्रलय
बीतता जा रहा है समय
गाँव मेरे लिए धूल है,
और तेरे लिए फूल है,
किस नगर तक मगर ?

•

नीर में पीर की गन्ध है
मीन का कब नयन बन्द है
नाव मुझको निरख झूमती,
और तुझको लिये घूमती,
किस लहर तक मगर ?

•

अब नहीं सो रहे भू-गगन
सुन रहे है हमारे कथन
एक मै आँसुओ का वजन,
और तू स्वप्नवाही नयन,
किस नज़र तक मगर ?

•

१७

पीता हुआ अँधेरा बढ़ता जाता हूँ
मैं पर्वत पर पर्वत चढ़ता जाता हूँ
जला गीत के दिये
मीत के लिये
चाँद, तू नेह चाँदनी ढाल रे !

मै तीरथ को निकल पडा हूँ राह पर
मन की धूप खिली है तन की छाँह पर
चुपके-चुपके पूज रहा हूँ प्रेरणा
मिलन छोड आया हूँ बिछुडी बाँह पर
सावन पर तो बहुत लगाये आशा हूँ
पर यह कहना कठिन कि कितना प्यासा हूँ
भरी घटा की नदी,
लहर से लदी,
तीर पर है मछुए का जाल रे !

•

गुजर चुकी है धूप सुबह की, शाम की
थमी हुई हलचल जीवन-संग्राम की
समय मिला चिन्तन, सुख-दुख-इतिहास का
रोएँ-गाएँ मर्ज़ी अपने राम की
चला सफर में, दिया जला तो पवन हिला
निहार जुगनू उड़ा, शलभ की तरह मिला
उसे रोशनी मिली,
ध्वजा-सी खुली
नाव पर उडा सलौना पाल रे !

तुझे पता क्या मन के हाहाकार का
गीत नहीं है कर्ज किसी के प्यार का
मरते-खपते जीवन का परिणाम ये
स्वाद कभी मिल सका नहीं त्योहार का
यह दीपक है, इसको जलते जाना है
मै पथी हूँ, मुझको चलने जाना है
प्रगट जहाँ मजिलें,
सम्हल कर चलें
वहीं पर कहीं छुपा है काल रे!

१८

बढ़ा दिया है पाँव आज मैंने अलबेली राह पर
गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना

विष का चाँद नही चाहा तो नयनों में भी प्यार न उमडा
रही चाँदनी फीकी-फीकी सपनों का ससार न उमडा
रूठी मुझसे रजनीगन्धा औ' नाराज हुई शेफाली
लेकिन मुझको रही फलवती सघर्षित मावस की डाली
मजिल परेशान है मेरी उठती हुई निगाह पर

गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना

●

जो जीने को ही जीते है, उनके लिए समस्या हूँ मै
जो विष पीने को जीते है, उनके लिए तपस्या हूँ मै
जो भ्रम में तटस्थ चुप रहते, उनकी दृष्टि अर्द्ध-अन्धी है
जो न रहे हर भीड-भाड मे, उनमें मेरी कृति बन्दी है
मेरी जिद्दी क़लम न चल पाती गैरो की चाह पर

गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना

●

अनगिन इन्द्र-धनुष टूटे थे, जिन सपनों की रांगोली पर
वे सब मैंने खुद ही स्वाहा कर डाले पिछली होली पर
सरस्वती को प्रथम मनाया, लक्ष्मी रूठी दीवाली में
आधी में उड़ गये फूल, पर गन्ध रही पूजन-थाली में

H34 58

आज उसे स्वर दे बिखराया मैने दर्द-कराह पर

गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना

●

अपने लिए जिऊँ तो मृत हूँ, मै हूँ अश्रु सभी आँखों मे
तुम्हे प्यार करने सब वारा, तुम ही एक दिखे लाखों मे
उस दिन तुम बोले थे,—कहते लोग सभ ी हर घर-आँगन के
तुमने इन गीतो के पीछे सपने तोड दिये जीवन के।

एक अजब इल्ज़ाम लगा है मेरे शाहन्शाह पर

गिरने लगूँ, बाँह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना

●

४

१६

एक मस्ती मिली, दर्द भूलूँ, मगर
नाचती ही नहीं मन-मयूरी अभी
अश्रु ने जो कही, प्राण ने जो लिखी
वह कथा गीत की है अधूरी अभी

पुत रही चाँदनी आज आकाश में
पर हृदय का गगन तो सजल ही रहा
पेड से है बँधा साध का चद्रमा
मेघ लेकिन स-दल-बल निकल ही रहा

आज आँसू कहाँ और सपने कहाँ
मिट न पाई, रही एक दूरी अभी
चार श्रोता जहाँ, आठ दर्शक जहाँ
वह सभा गीत की है अधूरी अभी

●

खींचना चाहते एक मुस्कान तो
फूल में कुछ खिलो, धूल मे कुछ मिलो
माँगना चाहते एक वरदान तो
मेघ बनकर चलो, नीर बनकर ढलो

कौन अरमान पूरा तुम्हारा हुआ
माँग किसकी हुई है सिदूँरी अभी
इस तुम्हारे कुँवारे सपन के लिए
सहिता प्यार की है अधूरी अभी

●

टूटता जा रहा मन सघन चोट से
फूटता जा रहा गीत का बाँध है
लेखनी चल रही आज पतवार-सी
खूब मझधार का मिल रहा स्वाद है

हर भयङ्कर लहर एक नागिन बनी
तैरती है कलम की मजूरी अभी
नाव के खून की प्यास जिसको लगी
सभ्यता विश्व की वह अधूरी अभी

•

यह सही है न कुछ से बहुत है हुआ
किन्तु कितना अधिक आज भी शेष है
रूप के, प्रीति के, गीत के राज में
अनसुना, अनकहा, विश्व है, देश है

जो पुरानी शपथ भिक्षुणी बन फिरी
पोछना अश्रु उसके जरूरी अभी
जो गगन को मिली, पर धरा को नहीं
वह सुधा पात्र की है अधूरी अभी

•

डबडबाती हुई आँख-सी जिन्दगी
रो भरी तो मिला एक आँचल उसे
जब सिसकता हुआ अश्रु उसमें गिरा
तब लगा है मिला एक मरुथल उसे

जो झुलसते दिनों में श्रमिक को मिले
वह बहुत दूर शिमला मसूरी अभी
फूल जिसमें खिला, फूल जिसमें मिला
मान्यता धूल की वह अधूरी अभी

•

२०

हो रहे हैं सब तरफ से आज मुझ पर विश्व के आघात,
लिखता जा रहा हूँ
कौन समझे गीत वे जिनको हृदय के रक्त से दिन-रात
लिखता जा रहा हूँ

लग रहा ऐसा कि नभ के पास भी मस्तिष्क है
पर मन नहीं है
चाँद-सूरज गीत सुनने को किरन-रथ रोक दें
ऐसा अनोखा क्षण नहीं है
जो झकोरा भी हवा का, हाँफता-सा जा रहा,
उसको दिशाओं से गरज है
जो न सुनती दूसरों की, उस घटा के गीत की भी
तो अलग अपनी तरज है
इस तरह दूरी गगन में और मुझमें बढ रही,
यह बात लिखता जा रहा हूँ
गीत की अपनी बही में, विश्व के वातावरण का
हो रहा आयात औ निर्यात, लिखता जा रहा हूँ

•

पेड बढने में लगा है, फूल खिलने में,
शिकारी भृङ्ग अपनी ताक में है
गन्ध बौराई चली है, पात पर शबनम ढुली है
ओस मेरी आँख में है
तमतमाती धूप भी संघर्ष के आकाश में
भारी तपस्या कर रही है
और छाया की न पूछो, जो कि अगणित बार क्षण में
जी रही है, मर रही है

इस तरह कोई न कोई काम अपनी व्यस्तता का
है सभी के साथ, लिखता जा रहा हूँ
पीर की नदिया किनारे घाट पर दृग के भरा जो
नीर, उससे धो रहा हूँ आज मनके हाथ
लिखता जा रहा हूँ

●

जूझती है वायु तरणी से कि तरणी जल-लहरियों मे,
लहरियाँ दीर्घ तट से
उठ रहे है, गिर रहे है, शोर करते ज्वार-भाटे
फूटते मानो लहर के पाप-घट से
और मेरी जिन्दगी का गम-भरा संगीत, खुद मे डूबकर
बेसुध हुआ है
नाव मेरे गीत की तूफान से टकरा रही, पर
माँगती किससे दुआ है
इस तरह सब ओर है संघर्ष का विभ्राट झंझावात
लिखता जा रहा हूँ
काटती मझधार नौका, व्यंग करता है सितारा व्योम का
अवदात, लिखता जा रहा हूँ

●

हो चुका घायल बहुत, तब गीत के इस प्राण-पंथी को
मिले पथगीर, जो घायल स्वयम् है
दूसरा जब हो मुसीबत में, कहो मत पीर खुद की,
हाँ यही प्रचलित नियम है

मंजिलों तक जब पहुँच होगी, मिलेगा सुख न इतना,
है कि जितना दुख डगर में
क्योंकि लापरवाह है, परवाह से मेरी, जगत,
सारी प्रकृति, धुंधले पहर में
इस तरह मैं हूँ अकेला, गीत रचना कार, लेकर
आज जीवन-कल्प की आशा-भरी सौगात
लिखता जा रहा हूँ
सिर्फ इस उम्मीद पर, होगी कभी तो नेह की
जीवन-मयी बरसात,
लिखता जा रहा हूँ

•

है बिछी शतरज जीवन को, लगी सघर्ष की जब शह,
हुई तब कल्पना की मात
लिखता जा रहा हूँ
जय-निनादों में समय के, जारही किस रूप की बारात
लिखता जा रहा हूँ

●

२१

किसी स्वप्न को खोज लाने डगर पर
उतारा गया है अकेला मुझे
कहीं का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
सफर पर समय ने ढकेला मुझे

चला पर्यटन के लिए हंस जिस क्षण
हुई हंसनी कुछ रुआसी-रुआसी
न मौसम सुहाया, न त्यौहार भाया
समा-सी गई नीड-भर में उदासी

नई कोपलें कुछ समझ ही न पाई
घुली रोज़ सी नींद निर्दोष दृग में
पिता किस भयावह डगर पर उडा है
उन्हे क्या पता इस बडे व्यस्त जग में

यहाँ के किसी दीप से स्नेह माँगो
कहेगा, न देना उजाला मुझे
कहीं का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
सफर पर समय ने ढकेला मुझे

•

लुटाया हुआ स्नेह लौटा बहुत कम
यही गम मुझे इस सफर में अखरता
मगर सोचता हूँ, कसौटी मिली है
चलूँगा बिखरता, चलूँगा निखरता

अभी रेलगाडी चली जा रही है
खटर-खट खटर-खट घने जगलों में
कही खेत सुख के, कही रेत दुख की
कभी मन किरन में, कभी बादलों में

मुझे हाट उठती दिखी एक, लेकिन
भरा भी लगा एक मेला मुझे
कहीं का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
सफर पर समय ने ढकेला मुझे

●

मिटा गीत मे हूँ, बना गीत में हूँ
सिवा गीत के और चारा नहीं है
उन्हे प्यार करता कि जिनको जगत ने
दुलारा नहीं है, पुकारा नहीं है

उन्हीं के लिये गीत मेरी विवशता
उन्हीं के लिये मै तकाजा समय का
नदी-पर्वतों-बीहडो-मरुथलो से
चला पूछता अर्थ सर्जन-प्रलय का

मुझे लग रही जिन्दगी एक पूजन
कला-आरती-दीप-वेला मुझे
कहीं का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
सफर पर समय ने ढकेला मुझे

●

विरह एक पथ है, मिलन एक मंजिल
पडी आँधियाँ नागिनों भी गले मे
अगर हो सके, तो सुधा बन चलो तुम
मगन हो महादेव के काफिले में

धरे शीश गागर, भरे पीत आँचल
मधुर मौन कुंकुम, अगरु-गन्ध-चन्दन
हवा मेघ की सीढ़ियों से थिरक कर
चली जा रही लीपने गीत-आँगन

जिधर आँख फेरी, उधर ही निकलता
दिखा एक रंगीन रेला मुझे
कहाँ का दिया है, किसी का पिया है
सफर पर समय ने ढकेला मुझे

●

२२

रो-रोकर सिन्दूर ढूँढ़ती मधुऋतु मेरे द्वार पर
बाग सजे क्या, दीप जले क्या, और मने त्योहार क्या

सागर-दृग में नीर भरे वह व्योम है, यह धूल है
शबनम से बोझिल-बोझिल हर पात है, हर फूल है
घुटती-घुटती साँसो-सा रुक-रुक कर चलता है पवन
धरती घूम रही लपटो में, करती सपनों का हवन
शरद निशाएँ गगन-सीखचो में युग-युग से बन्द है
हेमन्तो की गति-विधियो पर वासन्ती प्रतिबन्ध है

मन का उत्सव बलि देता धडकन के हाहाकार पर
गीत छिडे क्या, प्रीति हँसे क्या, रूप करे सिंगार क्या

●

भटका-भटका सा है मनवा, धीमा-धीमा राग है
मद्धिम-मद्धिम गति जीवन की, फिर भी मनमें आग है
मेरी उजली दोपहरी पर फिर सन्ध्या की छाँह है
सोच रहा जग, मुझको पावस की कितनी परवाह है
मै नर्कों की वट-पूजा पर स्वर्गों का वरदान हूँ
झाँकी सजी दूर मदिर में, बिन-देखे हैरान हूँ

स्वप्न नहीं आँगन प्रहरी है जब दृग-वन्दनवार पर
दर्शन कठिन महाजन को, मुझ हरिजन का परिवार क्या !

●

कभी-कभी मेरे सिरहाने आ जाती है चाँदनी
नींद-भरे गुमसुम सपनो को मिल जाती है रागिनी
सोचा करता हूँ दुनियाँ में सुख का नही अभाव है
कहीं धूप का पलडा भारी, कही भयानक छाँव है

लेकिन अलग न हो सकता मै, खुद अपनी आवाज से
वचित करना बहुत कठिन है मुझे सिर्फ अन्दाज से

क्योंकि बहुत से हृदय भरोसा करते मेरे प्यार पर
उनका दरद भुलाकर मेरे जीने में है सार क्या

•

मिट्टी का रेशा-रेशा असहाय है, निरुपाय है
गिट्टी तोडे जाता रोजी-रोटी का समुदाय है
कुजी लिये तिजोरी की, अन्याय देश मे घूमता
कत्ल किये सच्चाई का, ऐय्याश झूठ है झूमता
सोना-चादी मखमल-रेशम-सा बिकता ईमान है
धूल उड रही राहो मे भटका-भटका इन्सान है

अनगिन कलमे आस लगाए, खुले चोर बाज़ार पर
मुझको सपने की छाया मे रहने का अधिकार क्या

•

मरुथल समझ न पाता है मेरी मधुमासी प्यास को
समय घसीटे लिये जा रहा मेरी जीवित लाश को
मै बहार की करूँ कल्पना कैसे उस ससार मे
जो अब तक मानव की किस्मत बाँधे है तलवार में
जहाँ मध्य-युग लौट रहा है सिद्धान्तो की आड में
नया-नया ईधन पडता है, सुलगे हुए पहाड में
मिट्टी की सुधियाँ साधे है ज्वालाओ के ज्वार पर
तट पर बैठा वह जाने दूँ मै उनको मझधार क्या

•

२३

जब भी गिरा एक आँसू कहीं,
चुपचाप तुम रह सके तब नहीं,
भटका किये बादलों-से दुखी हो

तुमको भुलावा दिया हर दिशा ने,
लालच दिया अन्धकारी निशा ने,
लेकिन दिखा काँपता जब दिया,
तुमने उसे प्यार रवि-सा किया,
तब वह खिला एक सूरजमुखी हो

•

बिन पूजनों के रहोगे अधूरे
तुम पर हँसे मन्दिरो के कँगूरे
लेकिन तुम्हे जब दिखी वह व्यथा,
जिसकी रही अनसुनी ही कथा,
तुमको लगा काश यह भी सुखी हो

•

पीछे चला आ रहा कारवाँ था
तुमने यही सिर्फ उससे कहा था
पूरा करो यह सफर, हम-सफर,
हम तुम चलें उस निमिष के नगर,
मजिल कि जिसके चरण मे झुकी हो

●

५

२४

सपन सभी जो,
रुदन सभी जो,
खिले नयन में, नहीं तुम्हारे
मुझे प्रेरणा
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सब, नदी-किनारे

नहीं तुम्हारा खयाल आया, निहार पूनम खुले गगन की
सदा नहीं तुम दिये सुनाई, बहुत सुनी रागिनी चमन की
सुबह हुई तो मुझे लगा ये, निशा समय की गुजर चुकी है
नवीन-शिशु-शी लगी लुभाने, प्रसन्न मूरत खिले सुमन की
जवान किरनें,
लगीं थिरकने,
पलक उठाए, अलक सँवारे
मुझे प्रेरणा
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सब, नदी-किनारे

•

उजड गई बस्तियाँ कि जिनकी, झुलस-झुलस भूख की चिता में
निगाह रोई, रहे न आँसू, नयन मरुस्थल बने व्यथा में
अधर पियासे रहे, अधूरी रही आरजू, लुटे श्रमों की
उन्हे बिसारा गया, दुलारा गया नहीं, विश्व-सभ्यता में
उन्हें भुलाकर,
उन्हें रुला कर,
विहँस न सकते, नयन हमारे
मुझे प्रेरणा,
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सब, नदी-किनारे

मिलन तुम्हारा मुझे लुभाता, विरह तुम्हारा मुझे दुखाता
मगर समय की थपेड खाता-हुआ मनुज भी मुझे बुलाता
सदा सँदेशा तुम्हे पठाऊँ, घुमड रहे सावनी घनों से
तुम्ही कहो जब बदल रहा युग, यही सभी क्या तुम्हे सुहाता

कहो स्वयम् तुम
न जी रहे क्या,
कठोर सघर्ष के सहारे
मुझे प्रेरणा
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सब, नदी-किनारे

•

कहीं उजड़ता, कहीं सँवरता, भविष्य, इस देश के निलय मे
दिवस-निशा-ज़िन्दगी डगर पर, कभी सृजन में, कभी प्रलय में
लगी हुई है असख्य तोपें, खुली हुई थैलियाँ अनथों
तुम्ही कहो क्या लिखूँ कि जब एशिया उठा इस कठिन समय में

उमड रहे,
क्राति के बटोही,
चमक रहे, शान्ति के सितारे
मुझे प्रेरणा
मिली बहुत कुछ,
मगर नहीं सब, नदी-किनारे

•

२५

इस दिये के माथ पर यदि स्नेह का अभिषेक हो तो
यह भी पात्र जलन का हो सकता जग के इतिहास में
सूरज और चमक सकता है इस फैले आकाश में

किसे पता इसके ही हाथों होना हो अनमोल सृजन
कौन कहे इसकी किस्मत मे हो तुम सबसे अधिक वज़न

मरा-खपा तूफानों में यह रेगिस्तानों का पौधा
देना हो यदि स्नेह इसे तो करो नहीं कोई सौदा

तुम बहार हो और तुम्हारे चरणों में यह सावन है
जो पलाश-वन से गुज़रा हो, यह वह झरना पावन है

इस उजागर स्वप्न के नयनों का आँसू पोंछ लो तो
लोहू भी दे सकता है यह मरणोन्मुख उल्लास में
नई रोशनी भर सकता है, बुझते हुए प्रकाश में

●

इसमें भी दम हो सकता है, तुम वीरान कहो चाहे
रचनाकारो की बिरादरी में अनजान कहो चाहे

यह गीतों की गागर में सागर बनकर लहराता है
जाने कहाँ-कहाँ से प्रतिध्वनि आती, जब यह गाता है

बरस-बरस जाते है बादल, फूट फूट पड़ती कोंपल
डोल-डोल जाता है चातक, बोल-बोल उठती कोयल

इस सुबह के गीत को यदि राई-भर भी प्यार दो तो
यह दुख के पर्वत ढो सकता सुख की हर साँस में
यह सयोग जोड़ सकता है हर टूटे विश्वास में

●

तुम किस राज-भवन की मंज़िल, यह किस मिट्टी का ढेला
तुम जिन तूफ़ानों से बचते, यह उनमें पल-पल खेला

नहीं चाहता दया-कृपा यह, वह तो ढोंग तमाशा है
भूखा है बस यह दुलार का, और स्नेह का प्यासा है

स्वप्न इसे मगलाचरण है, आँसू राम-कहानी है
इस दर्दीले की दुनियाँ में तो पानी ही पानी है

इस किरन की पखुरी पर किरनों का आलेख हो तो
यह भी कुछ सौरभ भर सकता है सूने मधुमास में
तुरत डाल सकता है शबनम जलते हुए पलाश मे

●

२६

सुख भी छूटा, दुख भी फूटा, डूबा दहरी-द्वारा रे
तूफानों ने शोर किया पर तेरा गीत न हारा रे
डगमग करते पैरों वाले ! पथ में रुकना भूल है

तेरे बुझने का तो कोई अर्थ नहीं
तुझ पर अम्बर का चन्दा न्यौछावर है
तू उन सात सितारों का ध्रुवतारा है
मंजिल से पड़ चुकी कि जिनकी भाँवर है

सोच-समझ कर लौट गया है तुझ तक आ अँधियारा रे
नेह-पत्र सावन का लाया बादल का हरकारा रे
आँसू से भीगा-भीगा आँधी का धूल-दुकूल है

•

सपना तेरी नाव कि जिसका माझी तू
नयन-महासागर के गहरे पानी में
तूने तट की झाकी जैसे पा ली है
अनचाहे तूफानों की अगवानी में

तुझको उठती हुई लहर ने मिटते हुए निहारा रे
तट पर जागी हुई भोर ने अपना रूप सँवारा रे
बड़ी दूर से देख लिया उसने तेरा मस्तूल है

•

आई है जो बाढ़ उतर भी जाएगी
आँसू ही तेरा दर्पन बन जाएगा

संघर्षों की चलनी ही कुछ ऐसी है
जिससे जीवन का सौरभ छन आएगा

जैसे गंगा में मिलने जाती जमुना की धारा रे
रात-ढले पर क्षितिज-कुएँ में ढुलके उसका पारा रे
ऐसे ही झोंके में उडता पगडण्डी का शूल है

●

२७

मन ! तुम न टूटो अभी हार कर,
आँधी न हरदम रही द्वार पर,
तुम भी न दुर्बल रहोगे सदा

दी है चुनौती तुम्हें शाम ने
हँसता हुआ काल है सामने
शर ! तुम न छूटो अभी रोष से,
गुण छुप न पाते किसी दोष से,
तुम भी न दुखडा कहोगे सदा

•

गहरा बहुत नीर है दृष्टि का
जलयान संक्षिप्त है सृष्टि का
दृग ! तुम न फूटो, रहो गागरी,
हर क्षण न गहरी व्यथा बावरी,
तुम भी न तृण से बहोगे सदा

•

तुम आरती गा रहे, भोर है
सागर किये जा रहा शोर है
स्वर ! तुम न रूठो अभी मंत्र से,
होता न कुछ घोष के तंत्र से,
तुम भी पराजित न होगे सदा

•

२८

बिल्कुल नये अश्रु के राहियो !
बाहर न हो आँख की राह से

नभ हो कि मै जानते है सभी
गहरी बहुत है तुम्हारी व्यथा
आकाश के हर दुखी मेघ ने
मुझसे कही है तुम्हारी कथा
वे जो कि तुमसे अधिक है करुण
जो चाहते है तुम्हारी शरण
उनकी सुबह ढूँढ़ना है तुम्हें
हर एक मन के चरागाह से

•

मझधार में तुम पडे नाव-से
पर दूसरो के निकट कूल है
हर डबडबाती हुई आँख को
दुखडा सुनाना बड़ी भूल है
उसकी शिकन लो स्वयम् माथ पर
उससे कहो ज़िन्दगी है अमर
तन का दिया प्रश्न है कर रहा
मन पर बनी एक दरगाह से

•

तुमको नही चाँदनी मिल सकी
मेरा कहाँ चन्द्रमा दास है

इस ज़िन्दगी की विकल सृष्टि में
किसने रचाया कहाँ रास है
अपनी सुबह-शाम से भी परे
दुनियाँ करोड़ो चरण है धरे
जीवन सदा पूर्ण होता नहीं
केवल प्रणयवान निर्वाह से

●

२६

निशा के राजकुँवर !
चला तू आज किधर,
दिशा की पलकों से
उठा कर चन्द्रिमा

उजाली किरन-किरन है रूप निखारे
अभी से उसे विरह तू नहीं सिखा रे
किसी ने तुझे निरख कर गीत लिखा रे
पवन है बासुरिया
अरे ओ कान्हरिया !
गगन के गोकुल में
रही राधा शरमा

●

नयन की नगरी गगरी लेकर प्यासी
धरा से रूठ नहीं सपने आकाशी
कठिनता से मिलती है पूरनमासी
चुनरिया साध लिये
सधा उन्माद लिये
डगरिया पनघट की
कहे तेरी महिमा

●

किसी देवालय का तू देव अनोखा
कि जो भी आया, तूने कभी न रोका
बना है मरमरी राम-झरोखा
अभी चल रही कथा
किसी को नहीं पता
कभी खुद मन्दिर से
निकल जाती प्रतिमा

●

६

३०

कुंकुम बिखेरती सुबह-सुहागिन गाती है
भर माँग-माँग सिन्दूर,
न बैठो दूर,
कि फागुन गा लो रे !

पीले सिंहासन पर सूरज बैठा जमकर
वासन्ती राजतिलक के पल जगमगा रहे
कोयल-पपीहरे उठते मगल-गायन को
उत्साही पवन-झकोरे ताली बजा रहे

नाचते-नाचते तुतली तितली आती है
नूपुर में जय-जय कार,
नयन में प्यार,
कि होश सम्हालो रे!

●

रेशम पाटल के लालम शरम झरोखे से
मधुऋतु रानी मधुवन का उत्सव देख रही
वह प्यार-प्यार में वेणी की रजनीगन्धा
चुपके-चुपके मान्सल भीड़ों पर फेंक रही

भौरों की टोली फूलों को समझाती है
तुम जानो जी की प्यास
लगी है आम
हमें अपना लो रे !

●

कंचन किरनें पानी से रास रचाती है
सतरंगी सपने साध लिये मँडराते है
रसवन्ती बाहें सिमटी हुई लजाती है
श्वासों के अश्वारोही घिर-घिर आते है

चंचल बहार रंगों में भींग नहाती है
गाती है शबनम गीत,
मदिर है प्रीति,
नहाने वालो रे

•

फूले पलाश-से गीत वसन्ती छाया में
पतझर का बादल यहाँ नहीं घिर पाएगा
मस्ती के आलम की मिट्टी मधुमासित है
इसका कन-कन यौवन का गीत सुनाएगा

मधुऋतु कुंजों पर जीवन-वेल लगाती है
दावानल का उत्पात,
अँधेरी रात,
उसे समझा लो रे !

•

कि जब नील-नभ में चमकता सितारा
बहुत याद आता जुहू का किनारा

३१

कि जब नील-नभ में चमकता सितारा
बहुत याद आता जुहू का किनारा

पसारे गगन बीच सुकुमार बाहें
हज़ारों हिलोरें उठाएँ निगाहें
बिखेरे समुद्री सपन है पवन में
कुतूहल भरे दर्शकों के नयन में

कि जब डूबता है किरन का नजारा
हृदय सोचता है कि कह दे 'दुबारा !'

●

गरम रेत से त्रस्त बीहड़ अचचल
यहाँ आ गया है कहीं का मरुस्थल
खिली चाँदनी है, चरण धो रही है
झुलसती व्यथा अब तरल हो रही है

किसी दिन, किसी ने, किसी को पुकारा
पलक को उठाया, अलक को सँवारा

●

जुही की कली-सी महकती जुहू है
किसी कोकिला की मचलती कुहू है
किसी गूँजते-गीत की रागिनी है
किसी व्योम की झूमती चाँदनी है

कि जब ज्वार करता मिलन का इशारा
नयन में छलकता जलधि-नीर खारा

सलौने गगन की, महकती हवाएँ
किसी मेघ के बोझ से दब न जाएँ
न बाडव किसी बूँद से फूट जाए
कहीं वज्र नभ से नहीं टूट जाए

कि जब यह समा है, मधुर मौन प्यारा
किसी तीसरे नेत्र ने क्यों निहारा

●

३२

सावन ने तो आँखें भर डालीं बादल से
देखें बहार किस उदयाचल से आती है

बन-बन कर इन्द्रधनुष कितने ही टूट गए
शर-सी पुरवाई चली गई नक्षत्रों में
बिजली का मन आहत हो-हो कर तड़प उठा
औ' बरस उठा बूँदों के भेजे-पत्रों में

कुछ ऐसा दर्द लुटाया उसने आँचल से
पीड़ा की धुन ही हर पायल से आती है

•

डूबे सपनों के खेत किसी जमुना-जल में
बह गए गाँव के गाँव बाढ़ आई ऐसी
अमराई डूबी, डूबे उसके झूले भी
सागर से मिलने नदिया इतराई ऐसी

सब कुछ खोकर रोनेवाले से पूछो तो
अब कौन हवा किस मलयाचल से आती है

•

ऐसा घेरा है बरसाती अँधियारी ने
संघर्षों ने शहनाई ऐसी तोड़ी है
रचना की मंगल-वेला फिर कुहरे में है
करनी ने अपनी में आखिर क्या छोड़ी है

फागुन के लिये सिंहासन छोड़ेगा सावन
आवाज़ यही मन की मंज़िल से आती है

बादल से आँख मिला कर चलने वाले पर
जब बिजली गिरना ही है तो फिर गिरने दो
गीतों की माटी में वह भी मिल जाएगी
चाहो तो मधुऋतु में भी बादल घिरने दो

मेरी धड़कन का भ्रमर उड़ेगा गुन-गुन कर
ऐसी सुगन्ध पाटल-पाटल से आती है

●

३३

ठण्डी-ठण्डी छाँव है
मीठा-मीठा राग है
धरती जैसी आँख में
सपने जैसा बाग है

हल्की-हल्की दूब है
चलती-फिरती छाँव है
उठती गिरती है हवा
भूला-भूला गाँव है

खोई-खोई धूप की
बिखरी-बिखरी प्यास है
झरनों-वाली बाँह में
पर्वत क्या, आकाश है

•

नीला-नीला व्योम है
नीली-नीली रात है
भीगे-भीगे फूल है
झीनी-झीनी वात है

जंगल की सुनसान में
प्राणों-सी गहराइयाँ
गहरी-गहरी कन्दरा
आहों-सी तनहाइयाँ

•

ठण्डक की अँगडाइयाँ
गर्मी मेरी साँस में
जैसे पत्ता एक ही
कोई खेले ताश में

चलती-फिरती बीन पर
पत्तों का सगीत है
देखें सुनता कौन है
किससे किसकी प्रीति है

•

बूँदाबाँदी देखकर
आतप है पाताल में
बूँदों की ही भीड़ है
मैदानों के 'हॉल' में

पर्वत मेरा मंच है
छिड़ती जिस पर रागिनी
गाता हूँ मै झूमकर
सुनती सारी यामिनी

दुहराती संगीत है
ऊँची-नीची वादियाँ
पतली-सी पगडण्डियाँ
टेढी - मेढी घाटियाँ

आँधी है झकझोरती
झुकने वाली डाल को
जुल्मी करता तंग है
जैसे हर कंगाल को

•

दृश्यों के सैलाब में
रंगों की भरमार है
लहरों की आवाज में
गूँजा पारावार है

किसलय-दुल्हन डोलती
मारुत के हिल्लोल में
परिवर्तन के चिह्न है
जगती के भूगोल में

•

पर्वत है या मेघ है
बादल है या शृङ्ग है
कहते कुछ बनता नहीं
किसका कैसा रङ्ग है

बादल और पहाड़ के
अंगों में है भेद क्या ?
दोनों ही मजदूर है
बहता है ना स्वेद क्या ?

•

चश्मा हर पाषाण से
फूटे मन के स्नेह-सा
पेडों के झुक-झूम में
बन जाता है गेह-सा

ऊँची-नीची खाइयाँ
टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता
लगता है जैसे हमें
इनसे ही है वास्ता

कैसे कोई छोड़ दे
पाकर ऐसे कोष को
वर्णन करना है कठिन
लिख चाहे सन्तोष को

चट्टानों की भीड़ है
साया है चट्टान की
बहती फेनिल धार है
कल-कल झर-झर गान की

•

भागी आती धार है
जैसे मेरी प्रियतमा
मिलने को इठला रही
पाकर मस्ती का समॉ

पर्वत चारो ओर है
वादी बीचो-बीच है
जिसमें भर कर मेघ भी
मन को लेता खींच है

•

मै भी वादी में खडा
खोया-सा हूँ डोलता
कैसे क्या-क्या ऑकलूँ
अपने मन में बोलता

इतनी ऊँची है नही
सिद्धान्तो की श्रेणियॉ
जितनी इस सुनसान में
लटकी छवि की वेणियॉ

•

गर्वीले आकाश पर
मंसूरी का राज है
उसको औरों पर नहीं
अपने पर ही नाज़ है

किरणों का अभिषेक ले
रानी बैठी शान से
मेरी ओर निहार कर
कहती इतमीनान से—

"आया तू परदेस से
मेरे ठण्डे गाँव में
किरनों जैसे गीत को
बिखरा मेरी छाँव में

भावो के वरदान से
मेरा माथा चूम ले
मै भी तुझमें झूम लूँ
तू भी मुझमें झूम ले

•

मै तो तन की बीन हूँ
तू है मन का गीत रे
मन के गीतों के बिना
होती है कब प्रीति रे

आए मेरे पास तो
डूबूँ तेरे गीत में
जीतूँ तेरी हार में
हारूँ तेरी जीत में

•

सिंहासन खाली पड़ा
राजा तेरे वास्ते
आ जा भँवरे की तरह
फल-फूलों के रास्ते

कैसा अच्छा व्योम है
खिलता मेरा फूल है
झूला मेरी डाल का
दुनियाँ जाती झूल है

•

आमन्त्रण की बात पर
पहली-पहली बार है
तुझको यदि स्वीकार है
मुझको कब इन्कार है

जाने कब से ढूँढती
तुझको मै आकाश में
आखिर तू मिल ही गया
मेरे ही आवास में

छेड़ जरा संगीत तू
पूछ ज़रा मन की व्यथा
देखूँ तेरी कल्पना
कहती है क्या-क्या कथा

झूम कि मेरी प्यास की
सीमाएँ है टूटतीं
देख कि मेरे स्नेह की
धाराएँ है फूटती

•

रानी के इस राज में
राजा ! अपना गीत गा
मेरी बाज़ी हार कर
अपनी बाज़ी जीत जा

कैसा मीठा है समा
मेरे नीलम देश का
सानी मिलता है कहाँ
मेरे लहरिल केश का

•

मेरी ठण्डी साँस का
समझेगा क्या मर्म तू
अनबोला जो कुछ रहा
समझेगा क्या शर्म तू

आ शीतल हो प्यार से
सावन है, मधुमास है
मेरे अन्धे प्राण पर
हरा-हरा आकाश है

•

चारो ओर बहार है
चारो ओर खुमार है
तू है, मै हूँ, गीत है,
हरियाला संसार है

जीवन इस संसार का
चिन्ताओं से दूर है
यह यौवन का देश तो
स्वर्गों से भरपूर है

पारिजात खिलता यहाँ
नन्दन के सीमान्त में
गुंजन करता डोल जा
भँवरे मेरे प्रान्त में

गीतों के चंचल भ्रमर
आमंत्रण रस-पान का
किसको देता कौन है
बिन-मागे वरदान का

•

भूरे-भूरे शृङ्ग पर
जीवन-सी चट्टान है
जिस पर बैठा हंस है
पंखों में तूफान है

पर्वत-खेतों पर बिछी
हरियाली घनघोर है
यौवन-सी निर्बन्ध है
चंचल मन का मोर है

•

रूमानी आकाश का
फीरोज़ी सिंगार है
शेफाली-सी भूमि पर
ऊँचा तोरण द्वार है

एक बडी चट्टान ही
है प्रहरी के नाम पर
जो निर्मम निर्द्वन्द-सी
डटी हुई है काम पर

•

चलती-फिरती बीन पर
पत्तों का सगीत है
देखें सुनता कौन है
किसको किससे प्रीति है

ठण्डक की अँगडाइयाँ
गर्मी मेरी साँस में
जैसे पत्ता एक ही
कोई खेले ताश में

७

जंगल की सुनसान में
प्राणों-सी गहराइयाँ
गहरी-गहरी कन्दरा
आहों-सी तनहाइयाँ

नीला-नीला व्योम है
नीली-नीली रात है
भीगे-भीगे फूल है
झीनी-झीनी वात है

•

अम्बर ही तो झील है
दर्शन ही तो प्यास है
झरने वाली बाँह में
पर्वत क्या आकाश है

हल्की-हल्की दूब है
चलती-फिरती छाँव है
उठती-गिरती है हवा
भूला-भूला गाँव है

•

ठण्डी-ठण्डी छाँव है
मीठा-मीठा राग है
आँसू-जैसा फॉल है
सपने-जैसा बाग है

●

३४

नीली निशा के किनारे
खुलते बहुत से किवारे,
हैं किस महल के ?

भीतर भरी रोशनी देहरी पर खडी मन्द है
अन्तर खिला फूल है और बाहर उडी गन्ध है
सपने हमारे अमर है,
दृग तो सलौने भ्रमर है,
उजले कमल के !

•

माटी पिलाती रही विष हमें रोज ही रोज़ तो
आँखें उठाई गगन में कि कुछ तो नई खोज हो
लेकिन वहाँ भी धरे है,
नीली नजर से भरे है,
प्याले गरल के

●

३५

घिरते रहो, घुमड़ते रहो, बरसते रहो, गगन में तुम
गाते रहें, सजाते रहें, तुम्हारे सपन नयन में हम

सूखे नयन, तुम्हारे बिना, सुलगते रहे अँगारों-से
अपना चमन, तुम्हारे बिना, सजा ही नहीं बहारों से
फागुन मिला, बहुत मन हुआ, कि झूमें जरा पलाशों में
आँखें मगर, रहीं अनमनी, सभी फागुनी तमाशों में

छाए रहे, लुभाए रहे, बिछुड कर निशा-निशा में तुम
खिलते रहे, महकते रहे, समय की दिशा-दिशा में हम

•

ढोलक वही, मँजीरा वही, मुरलिया वही, वही नदिया
सावन बिना, नहीं कुछ बना, अजब-सी रही सभी दुनियाँ
मछुआ विकल, कि ग्वाला विकल, रही सुधि किसी इशारे की
ओढ़े हरी चुनरिया, खडी पहाडी नदी-किनारे की

तुम ही कहो कि कितने हिले मिले हो लहर-लहर में तुम
भाते तुम्हीं, सुहाते तुम्हीं, निहारें किसी पहर मे हम

•

जुगनू बने तुम्हारे दिये, मृदंगें बजीं, छिडी कजरी
बिजली उठी, थिरकने लगी, वृंदावन-जमुन-जली बजरी
राधा कहाँ, कन्हैया कहाँ, अलावें जलीं, सितारों की
झींगुर-धुनें, न कैसे सुने, कि रिमझिम छिडी फुहारों की

बूँदें गिरा, पिलाते सुधा, धरा को नई फसल में तुम
ओ हमसफर ! भटकते किधर, तुम्हें ढूँढते असल में हम

कोयल कहे, पपीहा कहे, कि तुमसे बहुत-बहुत आसा
अब भी बडी तपन है यहाँ, कि मनवा बहुत-बहुत प्यासा
ऐसा करो कि ज्वालामुखी, न तन में रहे, न मन में ही
अँबवा-तले, हिण्डोले बँधे, न झुलसे किसी दहन में ही

नैहर गई, दुल्हनियाँ नई, न रोना अधिक विरह में तुम
पावस-पथिक ! बुलाते तुम्हे, मुसाफिर नई सुबह के हम

●

३६

पगडण्डी से जाने वाली कृषक-वधू के वेष में
नई धूप का चीर उड़ाती आती युग की भोर है

पूरब के गेरुए मच पर दृष्टि और श्रुति आमंत्रित
खेत-खेत में फसल झूम पढती अभिनन्दन-पत्र है
चरवाहों की मधुर बँसुरिया रह-रह कर यह गाती है
नई दिशा के माथे पर कितना कुकुम एकत्र है

रगमच पर किसी नाट्य का परदा उठने से पहले
उत्सुक चर्चागत कोलाहल-सा खग-कुल का शोर है

•

कुजों के विश्राम-गृहों में देर तलक सोनेवाले
उजडे-हुए रईसो-जैसे दिवा-स्वप्न में लीन है
कर्मठ हँसिया उठा, ज्वार के व्यर्थ गर्व को काटने
अम्बर के सिहासन पर सूरज राजा आसीन है

किसी सगठित सेना की अत्यन्त श्रेष्ठ टुकडी-जैसी
किरन कर रही पीछा, भागा जाता तम का चोर है

●

३७

दृग की दुकान पर
मोती बिका नहीं
आँखें मिलीं तुम्हें
फिर भी दिखा नहीं

यह भी नहीं सही
वह भी नहीं सही
केवल तुम्हीं सफल
कीचड-भरे कमल
कोई भ्रमर कभी
तुम पर रुका नहीं

•

मैने दिया दिया
तुमने नहीं लिया
जो भी सृजन हुआ
तुमको वमन हुआ
मन का अहम-वहम
अब तक थका नहीं

•

सूरज बहुत चढा,
पर दिख नहीं पडा
बोले 'चिराग है
गाता विहाग है
पिछला सनेह ऋण
अब तक चुका नहीं'
तुममें बसा मनुज
अपना सका नहीं

●

३८

जिस समय से रचा गीत है
वह नयन का नया मीत है,
इक दुल्हन की तरह

है उमड़ता बहुत आज प्यार
देखता हूँ उसे बार-बार
जिस घडी से जला दीप है
उस घडी से बसा द्वीप है,
इक भवन की तरह

•

कुछ अजब-सी उठी एक प्यास
है गज़ब आँसुओं का लिबास
जिस निमिष से खिला फूल है
आँख में सज रही धूल है,
इक सपन की तरह

•

छन्द ने भाव ने, छल किया
जो मुझे यह नशा दे दिया
मन अटकता हुआ चल रहा,
मै भटकता हुआ चल रहा,
नील घन की तरह

•

३६

किसने निहारा ?
तम की परत पर परत तो चढ़ी
पर न चमका सितारा !

दीपक बुझा और सोचा कि कोई नही नामलेवा
सूने पडे मन्दिरों से पुजारी गए
शेष थी देवता की न सेवा
मेरी व्यथा को सुने-बिन
मधुर आँख में भर गया किस तरह नीर खारा
किसने निहारा ?

•

किसने पुकारा ?
भारी शिकायत रही नाम को
स्वर न फूटा दुबारा !
भूले हुए लोग थे एक युग से सुनी रागिनी को
टूटी हुई बीन, रूठा हुआ तार
भाया न कुछ सरगमों के धनी को
मेरी दुखी भैरवी की प्रथम पक्ति
सुन क्यों किसी ने लिया एकतारा ?
किसने पुकारा ?

•

किसने दुलारा ?
आया बड़ी साध से स्वप्न
पर खुल न पाया दुआरा !

जो आरजू भी उठी, वह गिरी पंथ के मोड पर ही
हर प्यास घट के निकट जा सकी,
तृप्ति के पद-कमल, सिर्फ दम तोड कर ही
मेरी अकेली पिपासा बहुत थी
किसी ने उसे क्यो अधर से सॅवारा
किसने दुलारा ?

●

४०

मैंने कोहनूर-सा प्यार किया जो चमका अम्बर में
मैंने सोचा शायद मुकुट परख का इसको मिल जाए

८

जब वह संघर्षों की कठिन कसौटी पर भी खरा रहा
उसको किसी प्रणय-इतिहासकार ने तिथि के साथ लिखा
लेकिन जब लकीर का हर फकीर टकराया रस्ते पर
उसने कहा बिचारा कोहनूर था, मिट्टी-मोल बिका

मुझको दो ससार मिले जीवन के इस सवत्सर मे
सच पूछो तो दोनो और निकट मेरी मंज़िल लाए

●

मैने हीरे-जैसा गीत लिखा, जो गूँजा तारो मे
मैने सोचा शायद यह भी जौहर कहीं दिखा जाए

देखा उसे जौहरी ने तो वह यों डूब गया रस मे
जैसे गागर में सागर पा जाए रेगिस्तानी श्रम
देखा उसे किसी बहुधन्धी ने तो उडती नजरों से
जैसे देख किसी सूरज को आँखों में घिर आए तम

मुझको अलग-अलग मुस्कान मिली दोनो दरबारों में
मैने निश्चय किया कि दोनो पर ही गीत लिखा जाए

●

४१

चूल्हा जलता रहे जिन्दगी का सदा,
इसीलिये अनमोल गीत ! मैं तुझे दे रहा माटी-मोल

तू मुझको कितना प्यारा है क्या कहूँ
कह कर बतलाना भी तेरे जन्म-दिवस का है अपमान
तुझे गुनगुना कर सुनना तो है मधुर
लेकिन करना प्यार नहीं ऐसा जैसा करना अहसान

अपने जीवन में ईंधन के वास्ते,
मै स्वार्थी भी हूँ निर्दय भी, पुत्र ! न तू मेरी जय बोल

•

ओ रहस्य मेरी नभ-चुम्बी ख्याति के !
कितना अखर रहा है मुझको तेरा यह अव्यक्त बिछोह
जैसे दशरथ के घायल आदेश से
राम अनुज औ' भार्या-सँग वनवासी हो, वनवासी, ओह !

तू न पर्यटक सिक्का है टकसाल का
विदा दुधमुहे ! भूल न जाना अपने कुनबे का भूगोल

•

४२

मेरे मन तुम पढ़ो और समझो तो इस संसार को
यहाँ आदमी एक नगर है जो अन्दर वीरान है

मै भी इसके नगर-राज्य का कोना-कोना छान रहा
कोशिश मेरी यह कि आँख से कोई दृश्य न हो ओझल
परकोटे के बाहर मनहर मूरत का आकर्षण है
भीतर उजडे फूलबाग में चुप है नेहा की कोयल

नहीं सलौना सोनमहल यह पाषाणों का देश है
इन्द्रधनुष का द्वार बना पर उसमें कठिन प्रवेश है

प्रेम यहाँ स्वार्थों की गलियों में खुफिया समझा जाता
एक पुरानी खण्डहर-कारा में बन्दी ईमान है

•

यह है अद्भुत राजनगरिया महासमर के बाद की
व्यवहारों की कार्य-कुशलता का ही नाम समाज है
इसके स्वर्ण सराफे में, कच्चे मीना बाजार में
नोटों की मीनार पहनती अधिकारों का ताज है

झूठ यहाँ हर रोज़ नया बन आता वक्त निहार कर
प्यार सिर्फ अहसान-प्रदर्शन पोस्टर-सा दीवार पर

मेरे मन तुम चकित न हो इस चलती-फिरती गठरी पर
अपने में ही केन्द्रित-सीमित युग का यह इन्सान है

•

४३

कलम चल रही है कागज पर, नाव चल रही सागर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना दर्द गीत की गागर में

धूल बनूँ तो बनूँ कभी, इस वक्त बहार-किनारे हूँ
सूरज की हर किरन भेंटने दोनों हाथ पसारे हूँ

प्यार, रूप, रस, गन्ध विश्व के, स्वयम् सिमिटते आते है
मूर्ति बनी प्रेरणा जमी है, मै आरती उतारे हूँ

पूछे क्या घर-द्वार पुजारी, जो भक्तों में खोया है
गाए क्या-क्या राग कि गायक सुख के आँसू रोया है
मागे क्या वरदान कि याचक सुध-बुध खोकर सोया है

लूटे क्या आकाश कि पागल का मन नहीं स्वयम् कर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना प्यार गीत की गागर में

●

साँझ हो रही, धूप घट रही, पाँव बढ रहे है तम के
डूबा सूरज जली चिता-सा, गीत गा रहा मातम के

लेकिन अपने जीवन के अगले-पिछले विश्वास लिये
स्वेद-अश्रु-कण पोछ रही लेखनी थकान-भरे श्रम के

आँख अभी निंदिया के घर में जोड रही टूटे सपने
दीप अभी दुनियाँ के आँगन में बैठा ही है तपने
फूल अभी भँवरे की सुधि मे लगा ओस-माला जपने

धूल किसी रावण-रथ पर रोती सीता-सी अम्बर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना दर्द गीत की गागर में

रात मुझे दे रही रोशनी, अपनी आँखों का पानी
मज़िल दूर खडी है मुझसे, फिर भी करती अगवानी

मीत मिल रहे है पडाव पर, अलग-अलग आवाजों के
आगे बढ़ने को कहती नैपथ्यों की [illegible] वाणी

वह मन ही मेरा मन्दिर है, जहाँ नेह से जले दिया
वह क्षण ही मेरी मसजिद है, मरा मनुज भी जहाँ जिया
वह तृण ही मेरा गिरजा है, ज्वार कि जिसने जीत लिया

वह धन ही मेरा गुरुद्वारा, जो युग-युग के घर-घर मे
देखूँ भर सकता हूँ कितना अर्थ गीत की गागर मे

४४

तोड़ने को डोर पल में तोड़ दूँ मुश्किल नहीं है
किन्तु मन की और ही कुछ राय है

मन यही मुझसे कहा करता कि प्यारे !
जो समन्दर है उसे परवाह क्या है
भाप ही है मेघ, बादल ही नदी है
सब तुझी में आ मिलेंगे, राह क्या है
एक अँधियारी अजब है, हर दिशा से छल रही है
किन्तु चन्दा तो तुझे अपनाय है

•

सोचता हूँ मै कभी यह भी, किसी दिन
आदमी से आदमी की होड भी दम तोड़ देगी
हर तरह से भागने की दौड कब तक
ख्याल मेरा है कि उसको राह ही खुद छोड देगी
इस तरह से क्या बटोही को मिली मज़िल कही है
इस तरह का हर मुसाफिर जो शुरू में शेर-सा था
अन्तत वह गाय है

•

टूटना आसान है, जुडना कठिन है
ज़िन्दगी मे है अधूरी जोड-बाकी
इसलिये षडयन्त्र कोई हो कहाँ से
मै उसे संज्ञा दिया करता निशा की
जानता हूँ यह निशा भी हार-थक कर ढल रही है
लग गई उसको सुबह की हाय है

•

४५

ओ समय की वसन्ती किरन !
अश्रु-त्तण के सपन जागरण !
डबडबाना नहीं

बस रहा शूल का गाँव है
काँपता गन्ध का पाँव है

इसलिए ओ सुबह के चरण !
ज़िन्दगी के पथिक आमरण !
डगमगाना नहीं

●

गीत भी माँगता भीख है
इन दिनों कुछ नहीं ठीक है

रोशनी से सजाना गगन
और बहना कि जैसे पवन
तिलमिलाना नहीं

●

पाठ तेरी जलन का लिये
हर निशा में जलेंगे दिये

गोद लेगा तुझे हर पवन
चाहते है सभी धूप-धन
टिमटिमाना नहीं

●

४६

सत्य को एक बार देखा
अश्रु का सागर तुम्हें लगा
किन्तु जब बार-बार देखा
स्वप्न से सुन्दर तुम्हें लगा

रात की पूनम से कर बैर
चाँद से तुम्हें बुराई मिली
तृप्ति को जब-जब भी तुम खले
प्यास से तुम्हें बधाई मिली

नखत की सभा गगन में हुई
सपन की सभा नयन में हुई
अधर ने नहीं अधर को छुआ
चूम कर अलक-पलक दी दुआ

मेघ को एक बार देखा
दर्द का बादल तुम्हें लगा
किन्तु जब बार-बार देखा
चाँद-सा कोमल तुम्हें लगा

●

राह चलते थे तुम चुपचाप
किसी वीरान चमन के पास
फूल-पत्तों से सूनी डाल
शीश धुनती थी सूखी घास

चुभा सहसा पैरों में शूल
याद तब आया कोई फूल
सुरभि से बँधी गुलाबी देह
नयन में मधुर ओस का मेह

शूल को एक बार देखा
राह का कण्टक तुम्हें लगा
किन्तु जब बार-बार देखा
फूल से मोहक तुम्हे लगा

●

देख कर दुख-दर्दों की भीड़
बचाए सुख तुम भागे कहीं
पीर, पर, तुम्हें मिली हर ओर
सदा ही तुमसे आगे रही

ज़िन्दगी के बन-बीहड बीच
नेह का कमल, घृणा का कीच
समय का भ्रमर, प्रगति का गीत
कोटि नारी-नर-स्वर-सगीत

नर्क को एक बार देखा
रक्त का सावन तुम्हे लगा
किन्तु जब बार-बार देखा
स्वर्ग से पावन तुम्हें लगा

शब्द की थी सादी पोशाक
भाव में चमत्कार था नहीं
झोपडी में था मन का दीप
स्वर्ण जैसा सिंगार था नहीं

जा रहा था कोई कवि मौन
व्यंग से तुमने पूछा 'कौन ?'
छिड गया गीतकार का तार
तुम्हारा हृदय गया झंकार

गीत को एक बार देखा
व्यर्थ का सपना तुम्हे लगा।
किन्तु जब बार-बार देखा
बहुत कुछ अपना तुम्हे लगा।

●

४७

भैरवी का है समय, यह ही हमें भ्रम हो रहा है
रोशनी के रास्ते के मोड़ पर तम हो रहा है

कह भले हम लें, दिशाओं ने हमारी आरती की
सत्य तो यह है, न मंज़िल तय हमारी भारती की
गीतवाले अनुभवी हर माथ पर गहरी शिकन है
रेत—सूनी रेत—प्यासे छन्द का होता निधन है

गर्व की प्रासाद-सीढ़ी पर विगत श्रम रो रहा है

•

दे चुके कुंकुम जिन्हें हम, मिल रही है धूल उनसे
खिल रहे थे जो सुमन में, नयन है उनके करुण-से
शाम की उजली डगर से, चली बनजारिन सुबह की
जा रहे क्षण लाश-जैसी पालकी ले चिर-विरह की

व्यर्थ सख्या दीपकों की, स्नेह जब कम हो रहा है

•

मूर्ति भी हम है नहीं, मन्दिर-कलश भी हम नहीं है
अर्चना के फूल ये फिर भी किसी से कम नहीं है
कुछ कठिन है ही नहीं आरोह हर मन का जुड़े यदि
काल-घट का दूध-पानी नापने हंसा उड़े यदि

आज तो मन आँसुओं का मूक आश्रम हो रहा है

●

४८

मिट्टी से फसलों का सोना देनेवाला देवता
नई अलावें जला रहा है गाँवों की चौपाल में

बूढा नीम बता सकता है कड़वी बात किसान की
लेकिन वह है मौन और आगे भी बोलेगा नहीं
क्योंकि आज धरती से आती ऐसी सोंधी गन्ध है
जिसके कारण कोई दृग में आँसू घोलेगा नहीं

पीपल से पूछोगे तो वह खोलेगा इस राज़ को
हरदम भोर नहीं छिपती है बादल वाले जाल में

•

इमली की खट्टी सुधियों में वह जी भरकर रो चुका
अब वह मीठी अमराई में फूँकेगा वह बाँसुरी
जिसका सप्तक जिसका सरगम सुना नहीं इतिहास ने
आल्हा, कजरी, बिरहा दुहराएँगे उसकी माधुरी

अब वह बना रहा है अपने हाथों अपने स्वर्ग को
चिन्ता बन कर जो बैठा था कल तक उसके भाल में

●

४६

लो अब गाता हूँ
कोई अन्धकार की चादर मेरी ओर बढ़ाए ना
जलता दीप है ये
इससे प्यार मुझको
कोई मेरी खुशहाली पर खूनी आँख उठाए ना
मेरा देश है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये······

इसकी मिट्टी में है गर्मी काल की
इसमें ताक़त है उठते भूचाल की
इतिहासों की गाथा इसके मूल में
एक चमकती दुनियाँ इसकी धूल में
इसके पवन-झकोरों में वह प्यास है
सिर्फ बहारों को जिसका आभास है
सजा और सकारे ऐसे है कहाँ
सूरज-चाँद-सितारे ऐसे है कहाँ
श्याम-घटा-बिजली-बरखा मन भावनी
रिमझिम बूंद-फुहार चदनियाँ सावनी
आल्हा की हुकार, रमायन की कथा
वृन्दावन के रास, गोपियो की व्यथा
त्योहारों की धूम, दिवाली के दिये
होली के रगो-बिन कोई क्या जिये
मनी पुरी के नृत्यो की चचल परी
और भरत नाट्यम पर छिडती बॉसुरी
यह सब मेरी दुनियाँ की आवाज़ है
इस पर ही तो होता मुझको नाज़ है

●

लो अब गाता हूँ
कोई हँसती-गाती राहों में अंगार बिछाए ना
पथ की धूल है ये
इससे प्यार मुझको
कोई मेरी खुशहाली पर खूनी आँख उठाए ना
मेरा देश है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये

•

झूमर - हँसली - पायल - नूपुर - रागिनी
काजल-मेंहदी-म्हावर, क्वारी चाँदनी
शुभशकुनों के मंगल-कलश दुआर पर
अनब्याहे दृग उठते वन्दनवार पर
और एक दिन जाती घर से लाडली
कुंकुम की डोली में चम्पा की कली
देश कहीं परदेस कहाँ, किसकी लगन
किसकी ममता-डोरी, मन किसमें मगन
और एक दिन संघर्षों की राह पर
जाता है परिवार बिलखता आह भर
साध चली शमशान, उमगों पर कफन
प्यासे मनवा प्यासे ही हो गए दफन
लेकिन इसका अर्थ नहीं होता मरण
मुझको जाना है न किसी की भी शरण

हँसी उड़ाने वाले जाते भूल है
मेरे मरघट में भी खिलते फूल है
इन पैरों में अभी सफर की प्यास है
इन अधरो पर तो अब भी उल्लास है

लो अब गाता हूँ
कोई मधुऋतु इस पतझर पर दानी हाथ ·उठाये ना
मेरा बाग है ये
इससे प्यार मुझको
कोई मेरे दुर्दिन को खरीद अहसान दिखाए ना
मेरा देश है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये

●

कौन गया है रेखाओं को चीर कर
रागोली से बनी हुई तसवीर पर
वासन्ती मिलनानिल खुलकर नाचती
राग-भरी-सी 'रूपम'-'गीतम' बाँचती
संस्कृति की पतली डाली है झूमती
नई गुलाबी कला जिसे है चूमती
फूल रहे अँबवा बोझिल अमराइयाँ
मीठी-मीठी पीर-भरी अँगड़ाइयाँ
बरखा में विरही की ममता जागती
हेर-हेर बिरहिन को नदिया भागती

सब अपनी-अपनी 'प्रेमा' की याद में
डूबे जाते है गहरे अवसाद में
क्वारी हवा गगन को देती छेड है
देखो टूट चली खेतों की मेड है
वीराने से बादल करता प्यार है
पनघट पर बिजली की चीख-पुकार है
जीवन की जमुना में जिसकी याद है
उसकी लहरो पर मुरली का नाद है

लो अब गाता हूँ
कोई साँवरिया को उसकी राधा से बिछुडाए ना
लीलाधाम है ये,
इससे प्यार मुझको,
कोई फूल-पात की कश्मीरी शबनम .उजडाए ना
भीगी आँख है ये,
इससे प्यार मुझको,
मेरा देश है ये।

●

किसी पेड को बना नसैनी, तैश में
गन्ध चली जाती है नभ के देश में
फिर जैसे अम्बर से झरते फूल है
भू की स्वप्नाजलि में जाते झूल है

लगता है, ये आई मीरा बावरी
नर्तित-गुंजित-जीवित राधा साँवरी
और 'सुनो भई साधो'—जुलहा बोलता
दास कबीरा विष में अमृत घोलता
नभ के पर्दे जलते सूरज-दीप से
चले सँदेसे इन्द्रराज के द्वीप से
मेघदूत ज्यों कालिदास के राज के
छिडते मेघमल्हार किसी के साज के
तानसेन-सँग आता बैजूबावरा
सुन जिसको निज सुध-बुध खोदती धरा
'बरसत नयन हमारे'—सूरा झूमता
चित्रकूट के वन में तुलसी घूमता
गीतकार से कहता मै, तुम भी उठो
झूमो मत पिछली जय मे, आवाज दो

लो अब गाता हूँ
कोई मेरे सरगम के पर्दों में आग लगाए ना
मेरा गीत है ये
इससे प्यार मुझको
कोई मरुथल के मरघट में छन्दों को दफनाए ना
भैरव राग है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये ··· ···

●

सुख का सपना हो चाहे दुख की बदली
मेरी दुनियाँ गैरों से सौ बार भली

तुम भी सुनते होगे इस सन्देश को
नई उमर है मिली पुराने देश को

जाऊँगा अपनी मिट्टी को पूजता
देखूँगा अब नहीं स्वप्न को टूटता

सिर-माथे लेना है धरती-धूल को
जिसने जन्मा है मधुवन में फूल को

लेकिन यह क्या, होती है आवाज क्या
धुँआ, आग, चीत्कार, ध्वस, है राज क्या

देशो में होती है खीचातान क्यो
शीत-युद्ध से दुनियाँ है हैरान क्यो

मेरे सुख-सपनो पर किसका हाथ है
क्यों पीछे चलती छाया-सी रात है

तोप लगाई है किसने इन्सान पर
क्या एटम गिरना है हिन्दुस्तान पर ?

नहीं, नही, मै नही इसे होने दूंगा
मै अपने सब प्रश्नों का उत्तर लूगा

लो अब गाता हूँ
कोई मेरी कंगाली पर अपना महल उठाए ना
ये जो झोपडी है,
इससे प्यार मुझको,

मैने खीची लक्ष्मण-रेखा कोई पॉव बढ़ाए ना
मेरा देश है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये ··· ···

●

५०

आवाज आ रही है—
साधना तुम्हारी आज कहाँ से कहाँ जा रही है
पथ भी तुम्ही बनाते हो,
रथ भी तुम्हीं चलाते हो,
राह बनाने वाले हो, पथ पूछा नहीं करो
कलम के कारीगरो ! उठो
कलम के महनतकशो ! उठो
कलम के जादूगरो ! उठो
तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के जादूगरो ! उठो···

कल तुम क्या थे और आज क्या हो
कल स्रष्टा थे आज लालसा हो
कल तुम रोते थे, जग रोता था
झरना तुममें बेसुध होता था
नभ को जब तुम देते थे वाणी
इन्द्रधनुष करता था अगवानी
छिडता था गीतो का इकतारा
और चमक जाता था ध्रुवतारा

याद तुम्हें होगी कोयल की भी
बरखा रानी की पायल की भी
पर्वत जैसे सागर में घुलकर
तब तुम सबसे मिलते थे खुलकर
ऊपर से हर साज़ सॅवारे से
अब तुम चलते हो मनमारे से
प्राणो के खेतों पर पाला है
यह सब तुमने क्या कर डाला है

आवाज़ आ रही है—
सर्जना तुम्हारी आज कहाँ से कहाँ जा रही है

तुम सपने के नायक हो,
तुम आँसू के गायक हो,
मोती की क़ीमत पर आँसू तोला नहीं करो
समय की आसावरी सुनो,
नये स्वर की बासुरी बनो,
कबीरा-सी शायरी बुनो,
तुम्हे मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के कारीगरो उठो . . .

•

आज अजब कुछ हिलते-डुलते तुम
किसी धर्म-काँटे पर तुलते तुम
कुन्दन हो लो जीवन में अपने
कचन तुमको दिखा रहा सपने
ढकी हुई रेशम में रोटी है
सबकी अपनी अलग कसौटी है
यह भी बडे मजे की है हलचल
दर्द बटाने आती है मख़मल !

आवृत और अनावृत चोरी में
अब तुम भी जा रहे तिजोरी में
गिरवी धरकर गीतों के घर को
क्या सँदेश दोगे दुनिया-भर को

क्या ऐसा पाँसा फेकोगे तुम
वासन्ती मस्ती बेचोगे तुम
आग लगा केसर की क्यारी में
कब बहार आई फुलवारी में

आवाज आ रही है—
कल्पना तुम्हारी आज कहाँ से कहाँ जा रही है
धूप तुम्हारी छाया है,
तुमको सबने गाया है,
जग को कितनी प्यास तुम्हारी, भूला नहीं करो
स्वरों की वीणा और कसो,
नयन में मन में और बसो,
मिले सुख पर कुछ और हँसो,
तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के कारीगरो, उठो !

•

वैकुण्ठी ऐरावत के आगे
तुम चारण-सेवक बन कर भागे
विद्यापति तो ढोल रहा रस को
मगर नहीं शिवसिंह मिला उसको
चिन्तन का आदर्श सो गया है
बाण भट्ट का हर्ष खो गया है

१०

कालिदास खिलता सरोज-सा है
कहाँ पारखी आज भोज-सा है

भूषण है, पर नहीं पालकी है
है तो केवल छत्रसाल की है
क्यों सामन्त उठाए अब डोली
सिर्फ सराहे वह कवि की बोली
इसीलिए वेतन की जाली में
गाली है कवि की कगाली में
इससे बुरी दशा भी क्या होगी।
कवि होता जाता वेतन-भोगी।

आवाज आ रही है—
वन्दना तुम्हारी आज कहाँ से कहाँ जा रही है
घिरी घटा का कहना क्या,
इस बहाव में बहना क्या,
कलम उठी तो उठी उसे फिर रोका नहीं करो
किसी तुलसी की तरह जियो,
किसी मीरा की तरह जियो,
किसी सूरा की दृष्टि पियो,
तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के जादूगरो ! उठो . . .

●

आई परिवर्तन की वेला है
यह समुद्र-मंथन की वेला है
अब तो लगता है हर चमन लुटा
सरस्वती का वेणी-सुमन लुटा
मुरझाया है कमल, भग्न वीणा
यह भी कोई जीने में जीना
मण्डप की निर्वसन कौमुदी-सी
आज शारदा लुटी द्रोपदी-सी

पल-पल संघर्षों का चौमासा
चातक फिर भी प्यासा का प्यासा
उससे मिलो कि कुछ तो दरद घटे
उससे कहो कि पथ के शूल हटे
तुम दर्शन-दिग्दर्शन में भूले
अमराई में झूल रहे झूले
कविता है प्रयोग के मरुथल में
या फिर वह गुरुडम के दलदल में

आवाज़ आ रही है—
अर्चना तुम्हारी आज कहाँ से कहाँ जा रही है
अमिय तुम्हीं ने गाया है,
विष का स्वाद बताया है,
इस शराब से बचो, पियो मत, झूमा नहीं करो

सुधा से खाली मेघ भरो,
सुबह के कर में किरन धरो,
किरन के माथे तिलक करो,
तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के जादूगरो ! उठो

•

तुम गाओ तो फिर धरती डोले
रुँधी रही जो कोयलिया, बोले
तुम ब्रह्मा हो, दो नूतन कृतियाँ
रचना की है अद्भुत परिणतियाँ
छन्दों का जयदेव निहार उठे
तुम्हें गीत-गोविन्द पुकार उठे
पूजा प्रतिभा और स्वेद की हो
रचना नूतन सामवेद की हो

मिट्टी आए, मंगल-घट बन कर
पौधा झूमे, वशी-वट बन कर
लू-लपटों पर ठंडी हवा चले
दुनियाँ कंकन राखी बँधा चले
गले मिले भस्मासुर सागर से
शीतल हो बादल की गागर से
गीत छिड़े सदियों का साज़ लिये
नये एशिया की आवाज़ लिये

आवाज़ आ रही है—
प्रेरणा तुम्हारे लिये नया इतिहास ला रही है
तुम्हे मल्हारें गाना है,
दीपक नहीं सुनाना है,
चमन समझ ज्वालामुखियों पर डोला नहीं करो
चन्दनी गीत बने फूलो,
फूल पर शबनम बन झूलो,
राह की धूल नहीं भूलो,
तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के कारीगरो, उठो !
कलम के मेहनतकशो, उठो !
कलम के जादूगरो, उठो !

●

५१

संस्कृतियों के देश मेरे !
संसृतियों के देश मेरे !
संस्मृतियों के देश मेरे !
ज्योति दो
ज्ञान दो
तम जहाँ हो
छान दो

•

अब तुम नभ से उतरे भू पर हो,
सामन्ती बाधा से ऊपर हो,
मिलकर मिट्टी के सुख-दुख भोगो,
मेरी धरती के नूतन लोगो !

एक नया ही मोड़ लिया है पथ ने हिन्दुस्तान के
माटी को शक्लें दे देंगे जादूगर निर्माण के

निर्माणों के देश मेरे !
वरदानों के देश मेरे !
तूफानो के देश मेरे !

कुछ कहो,
कुछ सहो,
दूर बैठे—
मत रहो

●

स्नेह जुड़ा दीपोत्सव मनता है,
बूँद-बूँद से सागर बनता है,
तुम भी सागर मर्यादा वाले,
ज्वार उठाओ मत बाधा वाले,

बूँद-बूँद को, लहर-लहर को, ज्वार-ज्वार को जोड दो
मन-मन में हो भोर जहाँ, तुम नाव उधर ही मोड़ दो

खजुराहो के देश मेरे!
उज्जयिनी के देश मेरे!
मृगनयनी के देश मेरे!

फिर उठो,
फिर जुटो,
स्वप्न वाली
आहटो !

●

रामटेक से दूत चला था जो,
मेघों में बन गया किला था जो,
साँची ने जो युग सजाया था,
वह विदिशा के पथ से आया था,

तब का दर्पण, अब का दर्पण दोनों ही है सामने
उन्हें देखकर आगत देखो आँखें दी है रामने

ओ गालव के देश मेरे!
ओ मालव के देश मेरे!
युग-मानव के देश मेरे!

सुख सजो,
दुख तजो,
विक्रमों के
वंशजो !

•

अभी सफर काफी तय करना है
डगर-डगर की खाई भरना है
हम नक्षत्र बने सूनेपन में
पूरे हों सपने जो है मन में

संस्कृति सबकी है, उसमें क्या जाति और क्या प्रान्त रे
नगर-नगर में, गली-गली में, मत हो जाना भ्रान्त रे

कहते है विश्वास मेरे
ये धरती-आकाश मेरे
आएँगे मधुमास मेरे

साथ दो,
हाथ दो,
हर तिमिर को
मात दो !

•

५२

गूँज-भरे जंगल में
धूल-भरे अंचल में
रात के अमंगल में
मंगली सितारा
तीसरा अँगारा
झाँकता दुबारा
टूक-टूक हो न जाय
एशिया हमारा

•

पूरब की नील-नदी है
तैरो बीसवीं सदी है
पशुओं का शोर किनारे
उनने कुछ शर्त बदी है

उनके सब स्वप्न विकल है
कीचड से मुक्त कमल है

दलदल में वे पडे हुए
पिछले सपने सडे हुए

मन में भयभीत मनौती
फिर भी दे रहे चुनौती

स्वीकारो, क्योंकि हमें खुलकर ही बहना है
कमलों के गहनों को नदियों ने पहना है

नदी-नदी मुक्त बहे
लहर-लहर मस्त रहे
बूँद-ज्वाल अस्त रहे
स्वस्थ हो किनारा

मंज़िली निगाहें
खींच रहीं बाहें
चीख रहीं नीर-भरी
राह की कराहें

आतिशबाजी प्रकाश की
बन बैठो महानाश की
जन्मी बारूद चीन से
भोली साथिन कपास की

सुख के निर्दोष ये दिये
तोपो के काम आ लिये

डाल हिली शुक्ल पक्ष की
सस्कृति के वश-वृक्ष की

अन्धकार बॉध कर चला
पूरब के द्वार अर्गला

सूरज का दीप न जो जलता आकाश में
बैठे ही रहते हम किरनों की आस में

चम्पा के पॉच पख
डोल रहे है निशंक
पर्वत के अंक-अंक, संगमी त्रिधारा

नयन वेधशाला
देख रही ज्वाला
उपनिवेशवादी का
चम्पई दुशाला

●

राज-योग के दिन बीते
बल-प्रयोग के दिन बीते
कोहनूर वापिस होगा
भोग-रोग के दिन बीते

फूल खिले जो गमलों में
अन्तर उनमें कमलों में

गुम्बद - महराब - मकबरा
मन्दिर-वाली परम्परा

इनको फिरसे ज़रा पढ़ो
शिक्षक है मोहन जदडो

ठहरो रे ठहरो, ओ सवाहक ध्वन्स के !
अंतिम दिन याद करो रावण औ कंस के

चीनी-बर्मी हम है,
मिस्री-रूसी हम है,
सैन्धव-वंशी हम है, विश्व हमें प्यारा

खूब चले आधी,
नेह-डोर बाधी,
नहीं ज़ार-नीरो हम
बुद्ध और गाधी !

●

चूनर है आज अनमनी
निर्धन-सी त्रस्त करधनी
जग की हर एक दिशा की
होती दो टूक अगनी

आँसू में डूबी-डूबी
खुशियों से ऊबी-ऊबी

दहली का स्वर रुँधा हुआ
शहनाई ने नहीं छुआ

लाठी औं भैंस की कथा
सभ्यों के विश्व में वृथा

युग का इतिहास नही लौटाए लौटेगा
लोहू का राजमुकुट स्वयम् गला घोटेगा

उठो एशियाइयो !
देश-देश भाइयो !
मुक्ति पर मरो-जियो, समय न कभी हारा

एटमी इरादे
वायुयान लादे
जंगल-कानून चले
ओढ़ कर लबादे

●

५३

आज मैं आकाश में हूँ

•

शीश पर बादल घिरे है
और कुछ ऐसे कि जो मेरे पगों में आ गिरे है
गीत उनकी वन्दना के गा रहा हूँ
निकट-दर्शन के लिये मै मेघ-तट पर आ रहा हूँ
किन्तु फिर भी कण्ठ सूखा,
लग रहा यह देश रूखा,
बादलों के देश में या मरुस्थल में ?
मै कहाँ हूँ ?
लोग जिसको पूछते है, पूजते है
व्यर्थ है वह मेघ नगरी—
मै यहाँ भी प्यास में हूँ
आज मै आकाश में हूँ

•

मैं विमानों के हवाई झूलनों में झूलता हूँ
बादलों से उठ, जरा ऊपर,
पहाडी चोटियों पर झूम कर,
उस भूमि को ही भूलता हूँ —
गीत का स्वर जिस जगह से अभी मद्धिम आ रहा है
प्रीति का स्वर आँख के हर स्वप्न को ललचा रहा है
इस परी के लोक में भी
मै उसी की आस में हूँ
आज मै आकाश में हूँ

●

क्या नहीं यह सच कि मै इस
प्रयोगी नभ के त्रिशकु-सुमात्रा में
यान की इस भीड़वाली यात्रा में
मूर्तवत हूँ, किसी सुन्दर-असुन्दर के पास बैठा
दृष्टि करती आरती है
और यह सम्मान मन्दिर में यहाँ के कम नहीं है–
मै इसी विश्वास में हूँ
आज मै आकाश में हूँ

●

घटा उतर्नी है नहीं सुन्दर कि जितना सोचता था
किन्तु फिर भी खींचती है ही मुझे वह
देख कर उज्ज्वल कपासी पाटलों से बादलों को

(जो सदा से सिर फिरे हैं
और सिर से पाँव तक आकर घिरे हैं)
गुनगुनाने लग गया हूँ प्रेरणाएँ
और ये सह-यात्री कुछ सुन न पाते गीत-गुंजन
यान के इस शोर गुल में
यान के बाहर घटाओं को पता क्या
मैं उन्हीं की कल्पना में
व्यस्त हूँ, संगीत-मय हूँ
दूर बाहर हों भले वे
किन्तु वे मस्तिष्क में मन में कि मेरे पास हैं
मैं भी उन्हीं के पास में हूँ
आज मैं आकाश में हूँ

●

मेघ का आकाश ऊपर और नीचे
सृष्टि सब अदृश्य ही है
देख मैं पाता नहीं कुछ
फेंक मैं पाता नहीं मन
उन सलौनी घाटियों पर पर्वतों पर
शिखर जिनके मन्दिरों के गुम्बदों-से
खेत जिनकी सीढ़ियों से
जहाँ पर्वतराज ने उठकर युगों से
बाँध डाले हैं प्रभंजन

११

आज उनको देवलोंकी व्योम में क्यों
देख भी पाता नही मन
सोचता हू, भूमिका है
मै अभी अभ्यास में हू
आज मै आकाश में हू

•

अभी थोडी देर पहले क्या समा था
खेत-पर्तों के सलौने वस्त्र पहने
गिरि-शिखर-माला खडी थी
चीड-वन था मुग्ध, संयत
और मन में उठ रहे तूफान-सा मजमा जमा था
सोचता था, मै बहुत उल्लास में हू
आज मै आकाश मे हू

•

यह हवाई यान पंछी की तरह है
फडफडाते पंख,
पंछी भर रहा ऊँची उड़ानें
यह समय से खेलता हर बार
उड़ने के बहाने
हंस यह ऊँचाइयों-गहराइयों के बीच उड़ता

और मै भी गीत के सन्देश-सा हूँ साथ जुड़ता ।
पर्वतों पर,
ऋषिकुलों, सुरलोक, किन्नरलोक में हूँ
गौरियो औ, शकरों की कथा से कन-कन भरा है
पाण्डवों की चरम परिणति से यहाँ का मन भरा है
मै मधुर मधुमास में हो लूँ, न हो लूँ
शिव-युधिष्ठिर की तरह
साहित्य-जग के
क्या किसी इतिहास में हूँ ?
हवा में हूँ,
मै अभी आकाश में हूँ

●

गीत वाली लेखनी से
गति प्रगति मैंने सजाई
भूमि की कृति लहलहाई
अभी वसुधा को सँवरना और है आगत क्षणों में
पर्वतों की शक्ति भरना है तृणों में ।
दूसरी मंज़िल
प्रयोगों के गगन की
बाहु में भर चूम लूँ
जीवन-डगर पर
तब कहीं उस अर्चना तक जा सकूँगा
फूल जिसके व्योम के तारे

पड़े आकाश-गंगा में कि जो सुध-बुध बिसारे।
प्राक्कथन मेरा लिखेगा
स्वयम मेरा स्वेद-सीकर;
बहुत होगी एक पुस्तक भी
युगों के पुस्तकालय में
सधे यदि लेखनी, तो।
यान मेरे गीत का
विध्वंस वाला नहीं
अणु के
अमन का है, चमन का है
गीत के इस यान में जो गूँज है
ध्वनि पख की है
धूल की प्रतिनिधि-स्वरूपा
है वही आकाशवाणी।

•

यह विमानी यात्रा
साहित्य के आकाश में है
यात्री हूँ मैं,
नहीं आवास में हूँ !
प्यास सन्तों-वसन्तों की
हेरती है,
आज मैं
आकाश में हूँ।

●

५४

सांझ-सकारे चन्दा-सूरज करते जिसकी आरती
उस मिट्टी में मन का सोना ढोल दो
ग्रह-नक्षत्रो ! भारत की जय बोल दो

वह माली है, वह खुशबू है, हम चमन
वह मूरत है, वह मन्दिर है, हम नमन
छाया है माथे पर आशीर्वाद-सा
वह सस्कृतियों के मीठे संवाद-सा

उसकी दहरी अपना माथा टेक कर
हम उन्नत होते है उसको देखकर
ऋतुओ ! उसको नित नूतन परिधान दो
झुल्स रही है धरती, सावन दान दो
सरल नहीं परिवर्तन में मन ढालना
हर पत्थर से भागीरथी निकालना

जिस मन्दिर-मसज़िद-गिरजे में कैद पडा इन्सान हो
जाओ उसमें किरन ! किवारा खोल दो
कुंकुम-पत्रो ! भारत की जय बोल दो

●

उसको करो प्रणाम, दृगों में नीर है
झेलम की ऑखों वाला कश्मीर है
बजरे और शिकारे उसकी झील के
लगते बनजारे तारे कन्दील-से

किसी नारियल-वन की गेय सुगन्ध से
अन्तरीप के दूरागत मकरन्द से
फूटा करता नये गीत का अन्तरा
कुछ क्षण को दुख भूल, विहॅसती है धरा

दो छवि-कमलों के अन्तर-आवास में
कोई बादल घुमड़ रहा आकाश में

सर्जन की मंगल-वेला में धूमकेतु क्या चाहता
बच्चों की पावन उत्सुकता तोल दो
देशज मित्रो ! भारत की जय बोल दो

●

हम अनेकता में भी तो है एक ही
हर झगड़े में जीता सदा विवेक ही
कृति, आकृति, सस्कृति भाषा के वास्ते
बने हुए है मिलते-जुलते रास्ते

आम्थाओ की टकराहट से लाभ क्या
मंजिल को हम देंगे भला जवाब क्या
हम टूटे तो टूटेगा यह देश भी
मैला होगा वैचारिक परिवेश भी
सर्जन-रत हो आज़ादी के दिन जियो
श्रम-कर्माओ, रचनाकारो, साथियो !

शान्ति और संस्कृति की जो बहती स्वाधीना जाह्नवी
कोई रोके, बलिदानी रंग घोल दो
रक्त-चरित्रो ! भारत की जय बोल दो

●

५५

कौन स्वीकारे भरी अंजलि नयन की
आज के कुछ, कुछ विगत के आँसुओं से

दूर वेदी पर महादेवी प्रतिष्ठित
पुण्य-सलिला, गीत की भागीरथी
श्रेष्ठ पूजन के नियंत्रक हाथ जोड़े
घेर कर कहते कि 'हम ही है व्रती'

क्यों मुझे ही रोकते प्रहरी उन्हीं के
पूछता मै मौन व्रत के आँसुओं से

●

मान-मन्दिर मूर्ति का है, चारणों का
किन्तु है अपमान-मन्दिर वह मुझे
द्वार पर जो रोकता सावन-बहारें
एक रेगिस्तान मन्दिर वह मुझे

मूर्ति-पूजन के नियन्ताओ ! निहारो
रक्त गिरता है शपथ के आँसुओं से

●

पूजनीयों को भले पूजक नया हूँ
प्यार प्रतिमा का मुझे भी तो मिले
वर्ग-भेदों में नहीं सीमित रहा जो
दान गरिमा का मुझे भी तो मिले

कह रहा है द्वार का हर एक हरिजन
मंच पर होते स्वगत के आँसुओं से

नींद के कारीगरों ने रूप शिल्पा
टिमटिमाती-रात की दीवार पर
आ गए जब भोर के शिल्पी वहाँ तो
व्यंग करने लग गए अधियार पर

तर-बतर है सीढ़ियाँ हीरक-महल की
भीड़-बोझिल राज-पथ के आँसुओं से

●

५६

बोल, बोल, बोल, अरी बेला ! तू है कहाँ
श्रमजा-सी स्वेदमयी
और सामवेद-मयी
कागज की राह-चली लेखनी पुकारती
बोल, बोल, बोल, अरी बेला तू है कहाँ

शब्दों का, छन्दों का, भावों का हर भ्रमर
गाता है गीत किन्हीं गन्धों के राग में
दूर किसी बगिया में खिलने से लाभ क्या
बेला के फूल खिलो कविता के बाग में

बोल, बोल, बोल अरी बेला तू है कहाँ

•

भोर-साँझ को निहारती हुई समुद्र-जा
एक बेशक़ीमती लहर मुझे उधार दे
एक छटा ज्वारों की मै भी तो देख लूँ
एक घटा सावन की रचना पर वार दे

बोल, बोल, बोल अरी बेला तू है कहाँ

•

गीतों की व्यक्ति और रागों की मीड़-सी
तारों की तीर्थवती वेला को है नमन
पावन उस ममता का स्नेह पात्र है कहाँ
स्वेद-रक्त-अश्रु किस कटोरे में लें शरण

बोल, बोल, बोल अरी बेला तू है कहाँ

•

जो है मन का धनी
जिसकी है लेखनी

उसकी ही वेला है, युग है, है भारती
कागज़ की राह चली लेखनी पुकारती
संगम को व्यग्र कलम, बेला तू है कहाँ
बोल, बोल, बोल परी बेला तू है कहाँ

●

५७

मंजिल के मन्दिर में पूजा के थाल-सा
पूरन है गीत पर अपूरन है आरती

आँसू के फूल और मुट्ठी भर धूल है
ये ही बस कुंकुम है, ये ही है अर्चना।
पावन है, उजली है कर्पूरी सर्जना
भूलो से बोझिल ये नयनो का कूल है
देगा वरदान अभी शायद ही देवता
मन मेरा फूला है, नैया के पाल-सा
धडकन की बनजारिन, हिम्मत ना हारती

•

सुख का जो कर्ज लिया, कुछ दिन के वास्ते
बढ जाए ब्याज नही अब तक के मूल से
भूलो को कब तक है दुहराना भूल से
अँधियारा घेरे है उजियारे रास्ते
देगा वरदान अभी शायद ही देवता
पथ ये जो सीधा है घाटी के ढाल-सा
रथ अपना थम-थम कर ले जाना सारथी !

•

गूँज रही बेला-सी मेरी ये लेखनी
सरगम जो सोए है इससे ही जाग लें
आँखों से समिधाएँ, साँसों से आग लें
गहरी अँधियारी है, आगे भी देखनी
देगा वरदान अभी शायद ही देवता
जिसका माथा ऊँचा सूरज के भाल-सा
उसको ही राज-तिलक करती है भारती

•

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०	८	तुमइ तना	तुम इतना
४९	३	मुझे	मगर
९१	१	भींग	भीग
१०९	१६	सुने	सुनें
१४६	१०	खोद्ती	खो देती
१६३	२	बैठो	बैठी
१६८	११	पास	पाश

१९५७ के नवीनतम प्रकाशन

श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर — **निबन्ध**

माटी हो गई सोना

प्रस्तुत पुस्तकमें बल और बलिदानको जीवन चेतना देनेवाले १७ अमर शहीदोंकी जीवन कथाओंका अन्तरचित्र खींचा है।

पृष्ठ स० १२४ — **मूल्य दो रुपये**

श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर — **निबन्ध**

बाजे पायलियाके घुँघरू

प्रस्तुत पुस्तकके इन लेखोंमें वही शुभ सपर्क है जो अशान्तिमें शान्ति, नीरसतामें सरसता और निराशामें आशाके भाव देकर मनको बिना किसी प्रयत्नके बदल देता है।

पृष्ठ स० २६६ — **मूल्य चार रुपये**

श्री आनन्दप्रकाश जैन — **कहानियाँ**

कालके पंख

प्रस्तुत पुस्तकमें १४ ऐतिहासिक नवीन कहानियोंका सग्रह है। भाषा सरस और परिमार्जित है।

पृष्ठ स० २५८ — **मूल्य तीन रुपये**

श्री रामप्रकाश जैन — **सूक्तियाँ**

शरत्की सूक्तियाँ

प्रस्तुत पुस्तकमे शरत्की लेखनीके निर्झरसे अनेक साहित्यिक सूक्तियोके मणि-माणिक्य सहसा ही झरते चले गये है उन्हींका सकलन इसमें है। ये सूक्तियाँ शरत्की बहुरूपी रचनाओं और पत्रोंसे चुनी गई है।

पृष्ठ स० ११६ — **मूल्य दो रुपये**

१९५७ के नवोनतम प्रकाशन

श्री अज्ञेय   कहानियाँ

जय-दोल

इस सग्रहमें अपने देशाटन और युद्धकालीन अनुभवोंका लेखकने पूरा लाभ उठाया है, ये कहानियाँ आपको अपरिचित किन्तु आकर्षक नये प्रदेशों, नये लोगों, नयी स्थिति मे ले जावेंगी—किन्तु निरे कल्पना लोकमें पलायन करके नहीं, एक नयी तन्मय कर लेनेवाली यथार्थताका उद्घाटन करके।

पृष्ठ स० १९२   मूल्य तीन रुपये

श्री राधाकृष्ण प्रसाद एम० ए०   उपन्यास

संस्कारों की राह

प्रस्तुत पुस्तक एक सामाजिक घटना प्रधान उपन्यास है। इसमें लेखकने मध्यवर्ग तथा मध्यवर्गके संस्कारोंकी कथा सरल सीधे-सादे शब्दोंमे ग्रथित की है।

पृष्ठ स० १७२   मूल्य ढाई रुपये

श्रीकृष्ण एम० ए०   एकांकी नाटक

तरकशके तीर

प्रस्तुत पुस्तकमें १४ एकाकी नाटक सग्रहीत है। भाषा सरस सुबोध है। सभी नाटक रगमचपर आसानीसे खेले जा सकते हैं।

पृष्ठ स० १९६   मूल्य तीन रुपये

सम्पादक—सत्येन्द्र शरत्   कहानियाँ

नये चित्र

प्रस्तुत पुस्तकमें सन् १९४८ से १९५२ तककी प्रतिनिधि हिन्दी कहानियोंका सकलन किया गया है।

पृष्ठ स० १९२   मूल्य तीन रुपये

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन तथा लोक-हितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५